

हिंदी
कहानीकारों
के
कथाचिंतन
के
संदर्भ में
उनके
कहानी साहित्य
का
मूल्यांकन



डॉ. तरुलता मटियाली

हिन्दी कहानीकारों के कथा-चिन्तन
के संदर्भ में
उनके कहानी-साहित्य का मूल्यांकन

हिन्दी कहानीकारों के कथा-
चिन्तन के संदर्भ में
उनके कहानी-साहित्य का
मूल्यांकन

डॉ० सरलता मटियानी

प्रकल्प प्रकाशन

दिल्ली न्यायाधीशों के अद्य-चिन्तन
के संदर्भ में
एनडी इण्डिया-न्यायिक का पुनर्गठन

श्री. एन.ए.

② : श्री. अशोक मिश्रा

पता : अशोक मिश्रा
11, अशोक मिश्रा कॉलोनी
एनडी-263138 -नयी दिल्ली (ए.ए.ए.)

संख्या : 1995

मूल्य : 300.00 रुपये

प्रकाशक : दिल्ली

मुद्रण : एन.ए. एन.ए. दिल्ली
एनडी इण्डिया, दिल्ली-110033

नीं और बाबू
को
लिये

कड़ी मूल्य और नौ पारों दुखी हूँ, यह एक शोक-व्यथा के अवसर्ग में व्यक्तता नहीं
का प्रतीक ।

यस कभी केतनों, विद्वानों के प्रति भी अपना आचार्य मरणा करती हूँ, जो
एक शोक-व्यथा में किसी-न-किसी रूप में मेरे सद्व्यक्त रहे हूँ । यह विद्वानों और
कदुर्गीतियों के प्रति विशेष आचार, जिसके विपरीत, दुखियों और कष्टियों के
व्यक्तियों का ही निःशर्कता-व्यक्तता है ।

द्वितीय शक्तिव्यक्तता, शक्तिक्रम, मे कभी-कभी भी शक्तिव्यक्तता विपरीत ही
ही भी व्यक्त हूँ, किन्तु मे बहुत कम समय में एक शोक-व्यथा को दर्शित किया ।

—शक्तिव्यक्तता

अनुसूची

पृथिवी	7
अध्याय 1	
द्विती में कथा-साहित्य और कथा-विचार	13
अध्याय 2	
द्विती साहित्यकारों का कथा-विचार/विधि/अवस्था :	108
अध्याय 3	
साहित्यकारों का कथा-विचार और कथा-साहित्य	137
अध्याय 4	
कथा-विचार का विकास	204
अध्याय 5	
सम्बन्ध	216
परिचय	281

दशम अध्याय

हिन्दी में कथा-साहित्य और कथा-चिन्तन

(क) केन्द्रीय पूर्व कथा-साहित्य (सन् 1900-1918)

हिन्दी कहानी का विकास अनुसूचक के साथ समाजिक क्षेत्रों काशी से हुआ है, और साथ ही शिक्षण, साहित्यकार, इतिहासकार, पाठक-न कोठारों पर कथा के प्रवर्धन कायम है। हिन्दी की समकालीन लेखिका कहानी प्रभावित करने का दौर 'अपठकों' रचना से है। 'अपठकों' के प्रकाशन के पूर्व हिन्दी के कोई लेखिका कहानी प्रकाशक नहीं होती।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के कथन के भी इसकी पुष्टि होती है।

'लेखिका की साहित्य रचनाओं में लेखी लेखी-लेखी नालयिकता का साहित्यिक-निष्कर्ष काशी है, यही साहित्यिकी की प्रथम 'बल' के साथ है संभवतः के साथ नहीं थी। वे साहित्यिक लेखन के बड़े लेखिका और पाठकों-न कोठारों के साथ में होती थी। हिन्दी प्रकाशक की सादी रचनाओं का आचार्य शुक्ल प्रकाशक होने का भी 'अपठकों' रचना में इस प्रकार की लेखिका साहित्यिकी के लेखन होने से।'¹

उससे यह कि 'अपठकों' के प्रकाशन के पूर्व साहित्यिक प्रकाशक हिन्दी साहित्यिकी का लेखन नहीं था। इस लेखिका के द्वारा हिन्दी साहित्यिकी के क्षेत्र में विवेक प्रकाश और प्रकाशक होने से। सन् 1900 ई० में विद्यार्थी-न कोठारों की साहित्यिकी 'अपठकों' प्रकाशित हुई, जो लेखिका के विचारों के साथ-साथ हिन्दी की समकालीन लेखिका साहित्यिकी को प्रकाशक की काशी है, जो साहित्यिक अनुसूचक का साथ-साथ लेखिका साहित्यिकी के लेखन प्रकाशक की थी। अतः इस पर साहित्यिक के 'लेखिका' तथा विद्यार्थी साहित्यिकी का प्रकाशक माना गया है, किन्तु

1. 'अपठकों' : प्रकाशक वि०, प्रकाशक (1900) क० साहित्यिकी-न कोठारों

2. 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' : आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, पृ० 143

करता है कि इसे 'सद्वैत' परम सत्य की शक्ति के रूप में विकसित किया जा ।¹

'एक टोकरी पर चिट्ठी' सद्गुरु की शैलिकला पर की यह सद्गुरु साधु कथाया समा है कि यह 'नवशैली का इलाक' का सञ्चालन है। जलनिकल काम की सद्गुरुओं का सम्बन्ध को सोचों के रहा है— एक संस्कृत कथाओं और दुःख-समयों की सद्गुरुओं का ।²

'हिन्दी साहित्य बीज' काय के उदात्त यत्न की सद्गुरुओं के लिए, उदात्त की स्वीकार किया जाता साहित्य कि हिन्दी सद्गुरु की संस्कृत एवं सारली साहित्य के द्वारा-द्वारा लोक-कथाओं की भी एक समुदाय सम्भव प्राप्त है। लोक-कथाओं की परम्परा के इस सद्गुरुओं परमाय के हिन्दी सद्गुरु की साधना के ही विचारदाय साहित्यिक विचार । 'नवशैली का इलाक' की भी कथा है, किन्ती उदात्त सन्सार काय की लोक-साहित्य है। 'एक टोकरी पर चिट्ठी' सद्गुरु पर साधन काय है, की लोक-कथाओं की ही है, सारली सद्गुरु की सद्गुरु ।

सम्बन्धित उदात्त सम्बन्धित 'साहित्य' के 'उदात्त' उदात्त में हिन्दी की उदात्त शैलिकला सद्गुरु के रूप में 'एक टोकरी पर चिट्ठी' की समुदाय विचार कथा, किन्तु पर साधना एक एवं एक विचारदाय कथा सम्भवी सद्गुरु ।

हिन्दी साहित्य के कुछ उदात्तकथाओं-शैलिकला में हिन्दी की उदात्त सद्गुरु के रूप में कथी उदात्तकथा का उदात्त विचार 'एक टोकरी पर चिट्ठी' (उदात्त उदात्त 1905) कथी एवं शैलिकला द्वारा उदात्त 'नवशैली-विचारों की सद्गुरु' (1979-का- उदात्त उदात्त द्वारा सम्बन्धित, वर्ष, 1966 ई- उदात्त शैलिकला, उदात्त) कथी शैलिकला 'नवशैली सद्गुरु' (1921-1995) की 'उदात्त लोक का सन्सार' का उदात्त विचार है। उदात्त में के उदात्त उदात्तकला शैली में किन्ती एवं उदात्तकला को है, किन्तु सद्गुरु सद्गुरु की उदात्त विचार उदात्त सद्गुरु । 'हिन्दी साहित्य बीज' काय के समुदाय—'साहित्यिक सद्गुरु की सम्बन्धितकथा की उदात्त उदात्तकला का की 'एक टोकरी पर चिट्ठी' का 'उदात्तकला-विचार', उदात्तकला उदात्त 'सद्गुरुकला सद्गुरु', 'साधना-विचार-उदात्तकला', 'सद्गुरुकला', 'नवशैली', उदात्त किन्तु के 'साहित्यिक-उदात्तकला', उदात्तकला की 'नवशैली की कथा', उदात्त विचारदाय 'विचारों सद्गुरु' का 'उदात्त लोक का सन्सार' का 'नवशैली का सद्गुरु' उदात्त शैलिकला और उदात्तकला सम्बन्धों में विकसित है। सद्गुरु के इस साहित्यिक उदात्त में सद्गुरुकला उदात्त को शैली के उदात्तकला की— एक संस्कृत कथा का शैलिकला-विचार शैलिकला कथाओं का उदात्त उदात्त सद्गुरु-सारली की सद्गुरुकला का। सद्गुरु में उदात्त के शैलिकला एवं शैलिकला कथाओं के सद्गुरुकला कथा 'सुख सद्गुरु', 'साधना सद्गुरु',

1. साधना-उदात्त की सद्गुरुकला। त- उदात्तकला कथा, पृ- 22

2. हिन्दी साहित्य बीज' उदात्त-9, पृ- 197

है।¹ 'बच्ची बड़ों' (1913) तथा 'विवाहित' इनके कहानी-संग्रह हैं। विशालकायका कथा 'भौतिक' में भी कुछ हास्य-व्यंग्य कहानियों की रचना थी।

कहानी के संकल्प की दृष्टि से 'बच्ची' में 1911 में प्रकाशित अज्ञान की कहानी 'बाम' विशेष उल्लेखनीय है, जो कहानी-कथा की दृष्टि से एक सफल कहानी है। श्री- राजशंकर शरमाकर ने इसे ही साहित्यिक दृष्टि की दृष्टिकोण से एक सफल कहानी माना है।² अन्तर्गत रामचन्द्र शुक्ल ने भी हिन्दी की प्राचीनतम कहानियों के नाम लिखते हुए अज्ञान की कहानी 'बाम' (1911) का नाम लिखा है। अज्ञान को 'बाम' कहानी वर्णनात्मक हीरे-मुद्दे की कथात्मकता का उदाहरण की कहानी है, जिसमें साहित्यिक विषयता भी है, आर्थिकता संयोग उच्च की और अज्ञान की ऐतिहासिक दृष्टि भी।³

अब 1911 में 'बाण विभ' में प्रकाशित कथा 'दुलियाँ' की 'कुम्भक जीवन', 'बच्ची' में अज्ञान की 'पौधा बाल' (1912), 'आकाशजीव', 'विवाह', 'बाम' के 'अच्छा', 'उल्लेखनीय' तथा 'विशालकाय अज्ञान' सिद्ध की बाक्य कहानी 'बामों में संकल्प' (1913 ई=), 1913 ई= में ही 'आकाश' में एक अन्य साहित्यिक कहानी विशालकायका कथा 'भौतिक' की 'अज्ञान' जति कहानियों के उदाहरण के हिन्दी मध्य में कहानियों की कहानी का नई और विशाल उदाहरण काय को कथात्मकता में विकसित हो रही है।

अक्टूबर 1915 ई= में हिन्दी की सुन-सर्जक कहानी 'अज्ञान' का 'अज्ञान' कथा 'दुलियाँ' 'आकाश' में ही प्रकाशित हुई, विशालकायका ऐतिहासिक कहानी है।

'बच्ची' कहानी हिन्दी कहानी के क्षेत्र में एक सुलभता की विकसित कथा है। अज्ञान, अज्ञान, आकाशका तथा अज्ञान का सुलभ कथा 'दुलियाँ' में यह कहानी अनुभवपूर्ण है तथा हिन्दी के अज्ञान की कथा की एक नई कथा अज्ञान कहानी कहानी थी।⁴

अज्ञान कथा विशालकाय अज्ञान के अज्ञान में ही प्रकाशित, एक कहानी के अज्ञान कहानी कहानी की हीरे-मुद्दे, आकाशका अज्ञान, अज्ञान कहानी है, जो अज्ञान को अज्ञानका अज्ञान कहानी है। एक कहानी के अज्ञान में 'अज्ञान' अज्ञानका सुलभ

1. 'हिन्दी साहित्य मीठा' भाग-1, पृ= 203

2. 'हिन्दी की कहानी कहानी' : अज्ञान- अज्ञान विषय अज्ञान, पृ= 17

3. 'अज्ञान का कथा-साहित्य' : विवाह 'अज्ञान' एक कथात्मक अज्ञान अज्ञानका, पृ= 3

4. 'विशालकाय' के अज्ञानका और अज्ञानका अज्ञान : श्री- अज्ञानका अज्ञान, पृ= 175

उनकी बहुसुत वर्गीकरणक अवस्था के दर्शन होते हैं। उन्होंने कहा है यही, जिनके विदेशी जीवन की भी अपनी बहुसुतियों का विशाल अवस्था है। 'ऐक्य का साधारण' बहुसुती वर्गीक विदेशी नृसमुदाय पर ही आधारित है, जिसमें उनकी केन्द्रीय कथाका आधारित है। साध ही, इसमें कथन-कथन की संश्लेषक संवेदना को अत्यन्त साक्षात्कृत के रूप में व्यक्त किया गया है।

'ऐक्य का साधारण' में कथाकार के वह दृश्य और अनुभूति स्तर की मानवीय किरीटिका की ओर संकेत किया है, जो हमारे साथ झुकी हुई होने पर भी हमसे क्या दूर रहती है। कथन का ही और कथन का अन्वेषण स्वयं को विश्व कथ्य साहित्यक अवधारणाका भी ओर में बना है, इसे बहुसुती के मानक केन्द्रकीय के आधार के माना जा सकता है। कथन के साक्षात्कार में देवसुतीय की ओरों पूर कथा साधुती स्तर पर झुकी बहुसुती के सुसंगतक कथन को प्रतिष्ठ करता है, यही हमारी ओर यह एक कथन का सुसंगतक कथन को है कि मानवीय कथन का साक्षात्कार ही कथन में जीवन की कथाको यही कथाकी है। हमारे यहाँ में कथन के साक्षात्कार के साथ ही किरीट बहुसुती की मानवीयकता यही यह कथनी, फिर यह कथा-बहुसुती के साक्षात्कार के ही एक सुसंगत कथनी कथनी है। कथन की-समुदाय कथन की साधारण कथा को ही और स्वयं जीवन की साक्षात्कार और कथनीयता में देखने सकते हैं।

सुदामन के साथ ही विशालकथाका कथनी 'कीर्तिक' (1991-1993) की ऐक्यक की अवस्था के बहुसुतीयक माने जाते हैं। 'कीर्तिक' की ही 'संस्कृतकथन' बहुसुती कथनी 1912 ई० में ही 'संस्कृतकथनी' में प्रकाशित हो चुकी थी, पर उनकी बहुसुती-कथा में विशिष्ट विचार और संश्लेषक स्वयंसाक्षात्कार केन्द्र-कथन के ही कथनी कथा। कीर्तिक की में कथन 388 बहुसुतीयों 'किरीट', 'साधारणकथन', 'विशालकथन', 'कीर्तिक', 'संस्कृतकथनी', 'संस्कृतकथनी', 'संस्कृतकथनी' आदि कथनी में संकलित है। उन्होंने साक्षात्कार कथनीयकथनी बहुसुतीयों किरीट है, किन्तु साथ ही एक कथनीयकथनी की कथनी में 'कीर्तिक' की में कथनीयकथनी बहुसुतीयों में प्रतिष्ठता की साक्षात्कारकथनी की कथनीयकथनी पर साक्षात्कार, कथनीयकथनी विशाल को कथनीयकथनी ही है और कथनीय के साक्षात्कार पर कथनीय की कथाका की है।¹

संस्कृत की प्रति कीर्तिक की ही बहुसुतीयों के विशाल की कथनी साक्षात्कार के साक्षात्कार के साक्षात्कार है और जिनमें साक्षात्कार की कथनी कथनीयकथनी— साक्षात्कारकथनी, कथनीयकथनी, कथनीयकथनी आदि का विशाल कथनीयकथनी के साथ किया गया है। उनकी कथनीयकथनी बहुसुतीयों कथनीयकथनी है और कथनीयकथनी की कथनीयकथनी के साक्षात्कार ही कथनीयकथनी का कथनीयकथनी कथनीयकथनी के ही कथनीयकथनी है। किन्तु

1. 'द्विती बहुसुती : कथनीयकथनीय' : सुसंगतकथनीय कथनीय, पृ० 36

सहृदयी-संवेदों के संवेद्य हैं। इनकी सहृदयियों में जगत् के सब अल्पवयी के साथ-साथ मातृविक्रम युवक की शक्तिशालता का बड़ा ही अद्भुत लक्षणीक प्रत्यक्ष होता है।

विद्यारमणस्य युग (1893) की कथा-काली सहृदयिता काशीवासी संवेद के दृष्टि: प्रकल्पित है और 'सहृदयी' सहृदयी-संवेद्य के संवेद्य हैं। इस संवेद्य के वर्ष 1923 के 1930 ई० तक की कालिक के बीच किसी बड़े सहृदयिताई। 'सहृदयी' युग की की संवेद्यीक सहृदयी है, जिसमें साहित्यिक युवक संवेद्यीक संवेद्यों की संवेद्य-संवेद्यिता का तीव्र प्रभाव किंचित बसा है। सहृदयी-संवेद्य की दृष्टि के भी इस सहृदयी का प्रभाव अत्यंत है। कथिवासी की काली 'जगत् की सहृदयियों को ही शक्तिशाल प्रत्यक्षता का प्रभाव जगत् है।'¹

इस युग के कथा-कालिकों में विवेकशंकर प्रसाद ('सुनिता', 'सुनी रात', 'सहृदयी' [सी रात], 'विद्यारमण', 'जगत् की सहृदयी', 'अभिषेक' इत्यादि सहृदयी-संवेद्य), राजा रघुवीरस्य प्रसाद शिबू ('बांकी बांकी' और 'सुसुतासि'), कालीप्रसाद 'सुवेद्य' ('जगत्-संवेद्य', 'जगत्-संवेद्य', 'जगत्-संवेद्य'), वा कालिक प्रसाद ('सुनिता', 'जगत् की संवेद्य', 'जगत्' और 'सुनिता') की संवेद्यीक सहृदयीकता है।

विशेषतः इस अद्भुत लक्षणी है कि इस युग में सहृदयी-संवेद्य के संवेद्यीक प्रभाव अद्भुतसि इस और संवेद्य काशी प्रसाद की सहृदयिता किसी बड़े। जिस एवं संवेद्यीकता की इस युग की सहृदयियों में परिष्कृत युग। विद्यारमण के काली किसी संवेद्य और साहित्यिक साहित्य द्वारा हिन्दी सहृदयी की एक संवेद्यीक साहित्य-कला का ही प्रभाव लक्षणी प्रभाव, कालिक अद्भुत संवेद्य सहृदयी संवेद्यों को संवेद्य किंचित, जिसकी सहृदयिता हिन्दी साहित्य की अद्भुत प्रति है। इस संवेद्यों के संवेद्य 'संवेद्य', संवेद्यीकता, जी० पी० श्रीवास्तव, राजा रघुवीरस्य प्रसाद शिबू इत्यादि सहृदयीकता प्रभाव अद्भुतसि है और इन्हें हिन्दी सहृदयी के संवेद्य में एक 'जगत्-संवेद्य' के रूप में मानते हैं।

कथा-विषय

जगत्-संवेद्यीक हिन्दी सहृदयी का प्रभाव एक ऐसे प्रभाव में हुआ, जब साहित्यिक कथा में साहित्यिक एवं साहित्यिक दृष्टि के संवेद्य युग साहित्यिकता का संवेद्य प्रभाव बसा था। 1919 ई० में सहृदयी काशी का कालिक के साहित्यिक कथा-संवेद्यीक, साहित्यिक प्रभाव में एक सहृदयीकता प्रभाव के रूप में प्रभाव बसा कला संवेद्य साहित्यिक, साहित्यिक प्रभावों के साहित्यिक प्रभाव की संवेद्यीकता

1. हिन्दी साहित्य की-2 (साहित्यीक साहित्यीक), पृ० 593

के अतिरिक्त का नाम रखते प्रारम्भ हुए। डॉ० श्रीराम शर्मा का एक सचर्य में अपने एक उदाहरण का ही उल्लेख करता हुआ लिखा है कि—“उन्होंने देवचन्द के विरुद्ध सचर्य में पहले बार को उनका अनुकरण नहीं किया, परन्तु अपने विरुद्ध नहीं किया की शीर्षक की। उन्होंने सचर्यों को ‘सचर्य’ के रूप में उदाहरण, ‘सचर्य’ और ‘सर्वोपेक्षात्मिक सचर्य’ पर जाने का प्रस्ताव किया। यद्यपि स्वयं देवचन्द ने भी 1910 ई० तक इस शान्तिवादी को या विचार का, पर अतिरिक्त की एक और सूची यह रही कि उन्होंने सचर्यसभु की शान्तिवादी उदाहरण के उदाहरण सचर्यसभु और सर्वोपेक्षात्मिक सचर्यसभु का उल्लेख किया।”¹

अतिरिक्त सुधार में सचर्यों का प्रारम्भ के अतिरिक्त रूप का बड़ा ही सुख एवं सहायक विषय अपनी सचर्यों में प्रारम्भ किया है। यद्यपि उनकी शान्तिवादी सचर्यसभु दिल्ली ‘समाज-समाज सचर्य’, ‘सर्वोपेक्षात्मिक सचर्यसभु’, ‘सचर्य’, ‘सचर्य’, ‘सचर्य’ आदि सामाजिक सचर्यसभु का ही उल्लेख किया गया है, यद्यपि ‘सचर्यसभु’, ‘सचर्य’, ‘सचर्य’, ‘सचर्य’, ‘सचर्य’, ‘सचर्य’, ‘सचर्य’, ‘सचर्य’ आदि सचर्यों में उन्होंने सुख सर्वोपेक्षात्मिक सचर्यों की शान्तिवादी के रूप उल्लेख है।

अतिरिक्त सुधार देव और सचर्यों के अतिरिक्त है। उनकी उल्लेख अनुसंधानों में देव सचर्यों के उल्लेख उदाहरण एवं उल्लेख विषयक सचर्यों के उल्लेख उदाहरण है। उनकी सचर्यों में सचरी शान्तिवादी एवं सर्वोपेक्षात्मिक की शान्तिवादी सचर्य सचरी है। सचर्यसभु सचर्यों का उल्लेख सचर्य को प्रारम्भ देव एवं सचर्य सचरी के अतिरिक्त किया है। उनकी सचर्यसभु उल्लेख सचर्य के अतिरिक्त देव और सचर्य की रही है। सचर्यसभु सचरी सचर्य है कि सचरी सचर्यों में सचरी देव और शान्तिवादी एवं सर्वोपेक्षात्मिक सचर्यों का उल्लेख नहीं है। सचरी सचरी सचरी सर्वोपेक्षात्मिक सचर्यों का उल्लेख नहीं सचरी है। अतिरिक्त देव सचर्यसभु, सचर्यसभु, सचर्यसभु आदि सचर्यों के सुख सचर्यों सचरी देव सचर्यसभु सचर्यसभु में उल्लेख है कि सचर्य सचर्य के उल्लेख सचरी सर्वोपेक्षात्मिक एवं सचर्यों का उल्लेख सचरी सचरी है।²

अतिरिक्त सुधार की शान्तिवादी सचर्यसभु—‘सचरी’ (1929), ‘सचर्यसभु’ (1930), ‘सचर्य देव की सचर्यसभु’ (1933), ‘सचर्य सचरी’ (1934), ‘सचरी सचर्य’ (1935), ‘सचर्य’ (1942) तथा ‘सचर्यसभु’ (1940) शान्तिवादी सचर्यों में उल्लेख है सचरी है।

अतिरिक्त (1911) सचर्यसभु सचरी के उल्लेख सचर्यसभु सचरी सचरी है। सचरी सचर्यसभु सचरी की शान्तिवादी और सचर्यसभु सचरी की शान्तिवादी सचर्यसभु

1. ‘दिल्ली सचर्यों : सचरी सचर्यसभु’ : डॉ० एच० एच० सचरी, पृ० 83

2. सचरी, पृ० 83

की प्रतिमाएं बननी, जलमें बसना, लीक, लीक, दुहाकद जोनी, बरगडौबारा
 खनी लवि के नही उखीरे की । हाथन में दून जोनों के ईकथन की बखनन
 की बने बखनन की, किनु जीके जीके इकी केधन में किबादा खनी गई । इका
 बारा न, इकी ईकथन-सीठी न बखननन इतिना की, न बखनन-बखुद
 बीरन-बुद बीर न बख-बीरन के बखन-विभन के प्रति ईक खखु ही ।
 वरिथान वद दून कि न कथननन उकी कथन वद कुविन मेरी के कथ हीके
 वद । " इकी नर, बी दून कथननन की कथुविनी के ईकथन की बखनन की
 कने बखने की नही कथनननन वनी वानी है । ऐतिहासिक बरिथान में उकी
 बखनननन की बखनन वनी का बखनन ।" कथननननन हिन्दी कथनी-
 साहित्य की कथननन कथननननन के बखुद कथननननन कथ-बीठी की
 नखननन में ही इके हैं, उकी किनु कथी कथन के कथन वकी कथन की गई । नई
 कथनी के कथनननननन का ईकथन की बखनन में बीरन कथनन बीरन की
 बीठी की लवि, बीरन की बखनननन की कथनन बखनन वना उकीकथन
 वनी बखनन ।¹

हिन्दी कथनी के यह विचारबाल दून की विचार नई-बीरन दूनन उकी
 किनु दून कथननन के कथनननः कनी कथनन इकी कि 'दून विचारनन-हिन्दी
 कथनी के विचारन की लवि के विचारबाल का उकीकथनीय बखुद है ।" दून
 दून में हिन्दी कथनी कने विचार की लविनननननननन की वान वन वद
 वदुन वनी कथु में इकी कने कथन वन के कथन हीके कथनी है ।²

ईकथनननननन दून में दुई न कथु के दून नर बीरन न ही लीके के बखन वर
 नई-बीरन का उकी विचारननन विचारु कीते है, न कथुमें हिन्दी कथनी साहित्य
 के नवीनन में दून दून की कथनी की कथन कथी वा लके । 'दून दून के कथनननन
 के कथनननन के लान की कथनी की कने कथननन नईकथन ही वनी, विचारनन
 उकीके के दून बी कथननन विचारु है— विचारननन नईरन बीरन कथननन की
 कथनननन के कथन बीरन कथन वर कथननननन दूनन वर के कथन-साहित्य वर
 कथननन बीरन नईरन वन में दूका का कथनन है । बीरनन में उकी विचार (साहित्यन)
 के कथननन वर कथननननन विचार है, नई कथननन के विचारनन उकीके के कथा-
 साहित्य का विचार-विचार विचार है । उकीके कुन विचारनन कथनननन वनी है,
 कनेके कथनननन के लान की कथनी—नई कथनी, नवीन कथनी बीरन

1. 'कथनननननन हिन्दी कथनी: कथन और विचार'। डॉ॰ विचारननन ननीर,
 पृ० ५०-५१।

2. 'हिन्दी साहित्य का इतिहास'। कथनन= डॉ॰ लीक, पृ० 59-4

पारोप्यु वाक्य द्वारा किये गये साहित्य की वास्तुनिक साहित्य नहीं कह सकते ।

समाजिक की दृष्टि में साधुनिकता दमिनी जीवन-सूत्री और विरोधी समाज के सङ्घ-सङ्घ से नहीं है—'साधुनिकता नहीं है, जो कानि ऐतिहासिक काल और समाजिक संदर्भों में उपस्थित हुई है—जो समाजों को सङ्घन हो करती है, पर अपने वास्तविक और साह्य संदर्भों में विहासकालीन और साधुनिक है ।¹ साधुनिक 'साधुनिकता' को 'समाज-नीयता' के समान समझें, 'समाज-नीय' जीवन-सूत्र का विचार साधुनिक ही, नदु समाजिक नहीं है ।² साधुनिकता को समाज-विरोधी भी नहीं कहा जा सकता है । 'साधुनिक' ऐसा शब्द है, जो किये हुए को सार्थक रूप में स्वीकार के लिये है—'समस्त: साधुनिकता एक ऐसी साहित्य-साहित्यिक विधि है, जो अपने ऐतिहासिक और समाज की सङ्घनक समाजवादी के सङ्घन होनी है और समाज-नीय जीवन को समाज देती है । सुख-सुख समाज-सूत्री में समाजों और सार्थकता होती है, जो साधुनिकता का समझ करने काहीन समझ के समान नहीं होता ।³

साधुनिक: समाजों के सङ्घ के कथा-साहित्य के लिए जब 'समा' समाज 'साधुनिक' विरोधों का समझ किया जाने लगा, जो उस सभी समझना का समझना के लिये समाज के समझ में ही, जो समाजों के सङ्घ के समझ में नहीं थी । इसके पहले कि एक समाज-सूत्रीय हिन्दी साधुनी के सङ्घ के सङ्घ में सङ्घन होने वाले लक्ष्य—'नई साधुनी', 'साधुनिक साधुनी', 'साधुनिक साधुनी', 'समाजिक साधुनी' आदि का विचार करें, नदु जब कि समाज-सूत्रीय ही है कि नदु समाज-नीय समाज-सूत्रीय भी, किन्तु समाज एक समाजों को हिन्दी साधुनी की विचारक देना समझना नहीं है ।

समाजिक के सङ्घ के सङ्घ एक सङ्घ के साधुनिक समाज को ही समझ के विचारक देना का समझ है—'साधुनी' समझ है, जो समाजिक के समाज-सूत्रीय लक्ष्य के सङ्घ पर समाजिक ही है समाज का समाज किन्तु समाज के विचारक के सङ्घ में ही समाज का समाज समाज का । समाजों में में सभी साधुनीय, समाज-नीय और समाज-नीय का समझ है, किन्तु समाजिक के सङ्घ के समाज को देना का और समाज को समाज समाज-सूत्रीय किन्तु समाज के विचारक भी । समाज नदु है, जो समाजिक के सङ्घ समाजिक में समाज-नीय किन्तु समाजिक के सङ्घ का समाज समाजों में समाज समाज समाज समाज समाज को साधुनिक का । समाज-सूत्रीय हिन्दी साधुनी में जो सभी समाज को समाजों एक

1. 'समी साधुनी की बुनियाद' : समाजिक, पृ. 77

2. वही, पृ. 81

3. वही, पृ. 84

साथ हिन्दी कहानी में घरेलू-आन्दोलन-आन्दोलन दिखाई गई, जो बता कि कहानी में एक नवजागरण आंदोलन की शुरुआत हो गई।¹

'नई कहानी' आन्दोलन का सम्बन्ध 'नई कविता' के आन्दोलन से सात दिनों-भरिही कम के अंतरा गहरा रहा है। हालाँकि 'नई कहानी' अपने उत्पन्न में 'नई कविता' के विपरीत है। नई कविता की शक्ति प्रकृत की एक सीधी नहीं, बल्कि एक ही साहस की सामर्थ्यता के कारण नए आन्दोलन होने के बावजूद 'नई कविता' के कहानीकारों की अभिव्यक्ति में अंतर होने के कारण उन अपने अपने अलग-अलग वैयक्तिक से पुका है। आलोचकों की नई विचारधारा, विमर्श उन्हें एक प्रकार 'आदर्शवाद' के रूप में स्वीकार करती है। कालेन्द्र के विचार के अनुसार हीन साहित्य की अवधारणा की परिधिप्रमाणक 'नई कविता' आन्दोलन का एक गहरा और उत्तरी के अलग-अलग ही 'नई कहानी' की कविता अभिव्यक्ति की एक होती है और 'नई कहानी' 'आत्म-आत्म के नए उत्पन्न और अलग से वास्तविक अवस्था को रेखांकित करने के साथ ही अपने ही जीवन के अविच्छिन्न चरित्रों है, नए-आन्दोलन, जीवन का नया से आकार नहीं।²

एकेश्वर शरण ने स्वीकारा है कि 'नई कहानी' का आन्दोलन 'नई कविता' की तरह हिन्दी परम्परा के अन्तर्गत में निरूपित है, न कि कविता की एकता पर। जो नई कविता के नई कहानी के नई साहित्य की एक विविध कल्पना के रूप में स्वीकार हो चुके के अति अन्तर्गत अलग करते है।³ एकेश्वर शरण के विचारों के विरोध में हीन एकेश्वर का अलग मत है कि 'नई कविता' का आन्दोलन 'नई कहानी' के पूर्व अस्तित्व में था, फिर कविताएँ परिचितकालों के इस अवधारणा की एक दिशा, अन्तः नई कविता के आन्दोलन के अति सम्बन्ध नहीं था। 'नई कविता' का आन्दोलन हम एक नयी परम्परा का 'सुनिश्चित एक विविध रूप और नई चरण का शुरुवात।⁴

'नई कहानी' की नई कविता के विपरीत पूर्व विविध प्रकृतों द्वारा हीन कालों के अंत ही दिखा है कि—'तुलनात्मक से अलग होने ही अलग-अलग और कहानी कविता अंत में घरेलू—अलग अलगता की अवधारणा और कहानी का अंत है। कविता के अंत में नई अंत नई-नई नहीं नही का अंत ही। जीवन कविता के अति प्रकृत है, जीवन कहानी के अंत प्रकृत है। जिस दिन कहानी जीवन

1. 'कहानी : नई कहानी' : डॉ० रामचन्द्र सिंह, पृ०- 182

2. 'नई कहानी की कृति' : कालेन्द्र, पृ०- 17

3. 'कहानी : प्रकृत और कविता' : एकेश्वर शरण, पृ०- 43

4. 'आत्म की शक्ति : नई कहानी' : कालेन्द्र, विमर्श, संकलन, अन्तः-सूचक, पृ०- 63

बलिष्ठ एक अनुभव के रूप में उनकी उपस्थिति या उपस्थिति का स्वीकार करते हैं—
 'आज की कहानी कथाओं का संकुलन का कथात्मक या परोक्षतात्मक विचार-मंच
 नहीं है—उसकी भाषा कथाओं या संघर्षों में से न हीनर उत्पत्ती की सांस्कृतिक
 प्रतिस्पर्धा के बीच होती है और स्वीकार के कुछ अनुभवों पर हीन-हीन कथात्मक
 कथनी हुई यह एक अनुभव अनुभव के पुनरुत्पत्ती है, एकीकृत यह कथा-भाषा
 नहीं, भाषा के उस अनुभव में आज की भाषा ही कथनी है। उसी कहानी की नहीं
 सांस्कृतिक उपस्थिति है कि यह अनुभव के उपस्थिति पर सांस्कृतिक होती है, कथनी का
 कहानी के उपस्थिति पर नहीं।'¹

संस्कृतिक कथा के कहानीकार के लिए, उदाहरण के लिए कथनी के सांस्कृतिक
 सांस्कृतिकी कथनी की कथनी की और उसी के कथनी की उपस्थिति होती।
 कथनी के सांस्कृतिकी के उपस्थिति कथा की सांस्कृतिक कथनी की कथा सांस्कृतिक
 सांस्कृतिक के उपस्थिति-कथनी की कथा सांस्कृतिकी, सांस्कृतिकी की कथा,
 'कथनी के सांस्कृतिकी की कथनी सांस्कृतिकी कथनी और सांस्कृतिकी के उपस्थिति
 का और सांस्कृतिक कथनी के बीच कथा सांस्कृतिकी की सांस्कृतिकी कथनी की
 कथनी के बीच। 'कथनी' का सांस्कृतिकी के लिए कथनी कथा कथनी का, कथनी के
 कथनी कथनी का ही सांस्कृतिकी का रहे।'²

'कथनी कथनी' का सांस्कृतिकी की कथनी है, यह कथनी के कथनी कथनी
 के सांस्कृतिकी के कथनी कथनी की है, जो कथनी के लिए कथा के बीच सांस्कृतिक
 कथनी का कथनी कथनी की कथनी की कथनी के सांस्कृतिकी के सांस्कृतिकी के
 लिए 'कथनी कथनी' की कथनी कथनी की कथनी का कथनी है जो कथनी
 में कथनी की कथनी के कथनी 'कथनी कथनी' कथनी की कथनी का 'कथनी
 कथनी' कथनी के कथनी कथनी है: 'कथनी-कथनी', 'कथनी के कथनी', 'कथनी कथनी
 कथनी', 'कथनी कथनी', 'कथनी कथनी', 'कथनी कथनी', 'कथनी कथनी कथनी',
 'कथनी कथनी कथनी', 'कथनी कथनी', 'कथनी कथनी', 'कथनी कथनी', 'कथनी कथनी
 कथनी' और कथनी कथनी कथनी की कथनी कथनी कथनी, कथनी कथनी कथनी
 कथनी कथनी, कथनी कथनी कथनी कथनी कथनी, कथनी कथनी कथनी के कथनी
 कथनी कथनी कथनी।'³

कथनी कथनी कथनी, कथनी कथनी कथनी की कथनी के कथनी कथनी के कथनी
 की कथनी कथनी कथनी का, कथनी कथनी कथनी के कथनी कथनी कथनी कथनी
 कथनी के कथनी कथनी कथनी कथनी कथनी कथनी कथनी कथनी कथनी कथनी

1. 'कथनी कथनी की कथनी': कथनी कथनी, पृ. 72-73
 2. 'कथनी': कथनी कथनी कथनी: कथनी कथनी, पृ. 45
 3. कथनी, पृ. 134

के जाने का प्रयास करने पर प्रकाश लेने-देने में विवश। 'सैरिया' द्वारा प्रकीर्ण समा-
 हीनता वाली कदुनी का विचार है; जाने परकार की देखने को मिलता है। कुछ
 कदुनियों की केवल हिन्दी रूप, हिन्दी विचार, किसी पर-विचार का विचार कदुनी
 है, कला-रस का जन्म जन्म हीन ही रहता है। 'सुधीर' कदुनी, 'वीरवार' कदुनी,
 और 'सुधासागर' की कदुनियाँ, 'रघु' की कदुनियाँ (जन्म कला ही है, परन्तु
 कौनो न सुधीर-विचार में कदुनी हुई है) और 'विशेष' कदुनी की कई कदुनियाँ कदुनी-
 कदुनी ही के समाहीनता का प्रकाश दिखाती हैं। 'असिम्' का कोई कदुनी-रस
 का कदुनी-विचार वह जाना करता है कि 'असिम्' के कदुनी-रस का विचार
 कदुनी-रस विचार है, और वह ही कदुनी को कदुनी कदुनी को कदुनी-रस का
 रस कदुनी कदुनी है, ही कदुनी है कि का ही वह परकार की कदुनी
 कदुनी है, का कदुनी-रस का रस में 'आन-सुधीर' रस का ही कदुनी-रस का रस है
 और वह 'असिम्' की वह ही कदुनी कदुनी है, कदुनी का रस का रस का रस है।
 वह कदुनी का रस का रस है कि 'असिम्' के रस परकार में ही है, ही
 कदुनी का रस का ही कदुनी-रस का रस में विचार का विचार। 'असिम्' कदुनी
 की कदुनी है, वह ही कदुनी कदुनी कदुनी, कदुनी कदुनी की कदुनी के रस
 कदुनी कदुनी कदुनी और कदुनी की कदुनी-रस का रस का रस है।¹

'असिम्' का 'अ' रस, 'सैरिया' का रस है, कदुनी का रस ही है कि के
 रस का रस है, वह कदुनी कदुनी है, रस ही है, किन्तु कदुनी के रस का
 'असिम्' का रस ही कदुनी कदुनी। कदुनी ही है ही वह ही कदुनी ही,
 किन्तु वह कदुनी के कदुनी-रस के रस किन्तु कदुनी का कदुनी-रस कदुनी
 ही, ही कदुनी कदुनी में कदुनी कदुनी, कदुनी कदुनी-रस का रस
 की कदुनी का रस कदुनी है।² कदुनी के रस का रस ही कदुनी-रस का रस
 ही कदुनी के रस का रस है— 'अ' कदुनी किन्तु कदुनी के रस-रस कदुनी
 कदुनी के कदुनी ही कदुनी के कदुनी-रस कदुनी की कदुनी कदुनी का रस ही
 कदुनी है। कदुनी कदुनी कदुनी के कदुनी के रस में ही कदुनी।³

'असिम्' कदुनी का, 'असिम्' कदुनी-रस का ही कदुनी-रस का
 कदुनी-रस कदुनी कदुनी का का कदुनी का किन्तु कदुनी-रस 'असिम्'
 के रस का कदुनी है।⁴ कदुनी-रस कदुनी के कदुनी-रस 'असिम्' कदुनी की

1. 'हिन्दी कदुनी' : रस कदुनी-रस : ही- कदुनी-रस, रस, पृ- 99-100

2. कदुनी, पृ- 97-98

3. 'असिम्' और कदुनी-रस : ही- कदुनी-रस, पृ- 13

4. 'हिन्दी कदुनी' : कदुनी-रस : ही- कदुनी-रस, ही- कदुनी-रस
 कदुनी-रस, पृ- 94

किस कथा, उसे 'कथुच्छी'—[किन्नीदीयास कीसानी—केकल-कुर्क-कुर्क]
 'गुदाकार' की 'कथुच्छी' (कलकल करत—ईशवास कुर्क), 'रोज' की
 'कथुच्छी' (कलेक-केकलकीकर कुर्क) तथा 'बड़ी कम हूँ' की रीता (कथु करतारी—
 कलकलकीकर कुर्क) में देखा जा सकता है।

यह कथन-कथन कुर्की का इतिवृत्त बनने वाले कथन चारों काल-कालों
 को केवलेन कथना कथन एक (जैव) ही है। बहुरी और पर केलेन पर के काली
 नाम कथनक कथन पर कथुच्छी है। चारों को कथना केन में कथना हीकर
 की केन को कथने कथनकथन कथ में जीया है। कथन कथी केन को कथ के
 कथेकर के कथना पर केने है, कथनक कथीकेन कथन की कथन कथने
 कथ कथी कथुच्छी नहीं है; कथनी कि कथनकथन कथन को। केन की कथ
 कथनाका कथन: कथनकीन है, किन्तु इन चारों कथुच्छी में कथ कथी कथनाका
 की कथन कथेन के कथेनकेन में ही कथनी है। 'कथुच्छी' को कि कथनीकी कथी
 के कथनके कथन की कथी है, कथनके कथनीकेन के कथन एक कथनकेन
 कथनीकेन कथनी की कथन कथी कथी है। कथनी केन को कथ कथी कथीकर कथनी
 है, कथ कथने कथन को कथुच्छी केने है। केन-केन की कथनकेन कथनका कथने
 कथ कुर्की कथन कथनकेन: कथु है। कथन के कथनेन में ही कथ कथनकेन के
 कथन कथने कथनकेन कथनका कथनी है। कथनके, कथी कथन कथनकेन
 कथनीकर की की है।

'गुदाकार' कथुच्छी में कथन कथनकेन कथनकेन कथन है कथनेकेन कथन-
 कथनकेन कथनीका का कथन ही कथु है कि कथ कथने कथन के कथने कथन को
 कथन है कि केन की कथनी है कथन कथनी की' इस कथनी में की कथन कथन
 केन को ही कथनी है किन्तु कथन कथनेन के कथन कि कथने कथन के कथनेन केने के
 कथन-कथन के कथन कथु की कथु का कथन कथने है।

'रोज' की कथनी के केन में कथन की कथी है, कथनकेन की कथी, केकल
 कथनकेन है। कथने कुर्क-कुर्की के कथनकेन पर कथने कथने के कथने एक कथनकेन कथ-
 नका कथन कथने कथनकेन केन है कथन कथु कथी कथी केने की कथनकेनकेनेके
 कथनकेन के कथन में कथने है। कथनकेन कथनकेन में कथन कथी कथु कथी कथनकेनकेन
 का कथ कथन कथनकेन की कथु का कथनकेन है।

'बड़ी कम हूँ' की रीता का केन कथन-कथनकेन कथी, कथु कथुन कथन केन के
 कथनकेनकेनकेन कथन में कथनकेन है। कथन और कथनकेन केन केन केने है कथन
 केने में के कथनेकेन कथन की रीता कथनी है, कथी केन कथ कथुच्छी कथने कथनकेन है
 कथनीकेन कथुन कथनकेन कथनकेन कथी, केन को कथनकेन कथनकेन है। कथनकेन के कथन
 कथी कथु रीता की केन का कथ कथु कथु कथन और कथनकेन कथनकेन है, कथन कथनी
 ही कथनकेन के कथन के कथन कथी कथु की। 'कथी कथन है' केन कि कथन कथनीकेने

उस विनयि में फिर कृपे परभावविद्यां उपदेश्य कह्युष्य भी एत उद्वेगपूर्णे विद्यापय एव शक्ती हे और विनये कह्युष्य और कथय्य, दोनों ही बहुत बड़ी बलि हुयेही हे।¹

1. 'परमलक्ष्य के लक्ष की हिंदी कहानी' : उपदेशिकां और कथिकां (विश्व) लेखक डॉ० कालीचरणस्य कश्यप, नई कहानी : कथनों और कहानि, डॉ० के.के.शंकराज कथाशी, पृ० 218

द्वितीय अध्याय

हिन्दी कहानीकारों का कथा-चिन्तन (विविध आयाम)¹

(क) कृषि और खेती

कृषक का जीवन ही कृषक-उद्योग-साहित्य का हीरो है। जैसे ही उद्योग-उद्येय-कार, कृषक के इतिवृत्त ही नहीं बल्कि कहानीकारों के कथा-चिन्तन के क्षेत्र में भी एक आक्रामकता को देखा जा सकता है। कई बार कथा-चिन्तन के सीधे उद्देश्य का साहित्यगत अभिव्यक्त को मान्य करते रहे हैं और इसके उदाहरणों को विविधता के अन्त-भाग, युद्धभरी और युद्धरङ्गों को भी प्रसार किया है। चिन्तन की उन्नति में वैचारिक ही नहीं, बल्कि सैद्धांतिक कथा-चिन्तकों का भी होना एक अलग-थलग उन्नति है और इसी उन्नति में 'कृषक' की अवधारणाएँ तथा उदाहरणों और पात्रवर्गों का उद्भव करते हैं। हिन्दी के कहानीकारों के 'कृषक' को भी इसी कथा-चिन्तन की इसी पेशाबी में देखा जा सकता है।

कहानी-कृषक भी एक हाथ उन्नति है, जो खेतीबाड़े के वैचारिक व सांस्कृतिक मन-बहाने का साहित्यिक आरूप ही है। कृषि के अर्थ-व्यवस्था का कोई अर्थ नहीं, खेतीबाड़े के बिना कृषि का। वे दोनों अलग-थलग विषय हैं। खेती, अर्थ-व्यवस्था हीन, सामुदायिक और सामाजिक दोनों अलग है। सामुदायिकता को जानकर से ही होती है, सामाजिकता विषय जानने से, जो इसके 'हुने' से अलग-थलग का मान भी एक समझी है और वैचारिक का भी। कृषक की उपस्थिति और इसके परिभाषण ही 'कृषक' का अन्तर्भाव करते हैं। मनु को आचार, विचार और कृत्यों से ही खेतीबाड़े और कृषि की कृषि ही कृषक हीरो है। एक सांस्कृतिक-व्यवस्था की आत्मसाक्षात्कार और जीवना-मान्य है, दोनों से।

अब खेतीबाड़े का अर्थ-व्यवस्था है कि 'अब हिन्दी कहानी-लेखकों में कृषि, कृषि-व्यवस्था और खेती का अर्थ-व्यवस्था विचार हीरो आता है—कहानी-लेखकों के उद्भव-व्यवस्था का हीरो है। इसकी उन्नति-व्यवस्था उन्नति-व्यवस्था हीरो

है। उसमें कोई नहीं, कोई खरिदों और कोई धरनाओं के लिए उठाया नहीं उठा। वह सब केवल एक हीका था, धरना की एक कसब का कसौटी द्वारा-सर्पों चिन्तन है। एक एकलपदा ने उसमें कथा, कालविषयका और हीरता का भी है। एक उसी प्रकार का अंत कथा, चिन्तन का अंत कथित कहता है। धरनाओं का अन्तान कहल ही नहीं रहा। उनका कहल केवल धरनों के खरीदकों को कसल करने की दृष्टि के ही है—कहलता यह कि कहानी का अन्तान सब कहल नहीं, कहलुक्ति है। जब केवल केवल कोई हीनक कसब केवल कहानी लिखने नहीं केवल जाता। कसलता कहल कहल खरीदों नहीं है। यह ही कोई हीने डेला कहल है, लिखने लिखने की कसल ही, और इसके अन्त यह कसल की कसल कसलकों को कसल कर लेने।¹ इस कसल कसब केवल है कि केवल केवल केवल की हिन्दी कहानी कहलुक्ति, खरीदक, खरीदी कसलविषयके कसलविषयके खरीदकों को, कसल: यह कसल के कसलकसल कहानी की खरीद कर लेने कसले हुए, कहल के कसल-कसल, कसलकों में कसले खरीद के खरीद लिखने के कहलुक्ति का नहीं भी। कहलुक्ति के कसल कहलुक्ति कसल कसल के खरीद न कहलुक्ति, कहलुक्ति के ही किन्ही खरिदों का धरनों को कसल-विषयों के कसल के कसल में कहलुक्ति होने नहीं। कसल: कहलुक्ति के धरनाओं की कसल कहलुक्ति की कसलकसल कहानी लिखने का कसल केवल कसल कसल नहीं। कहलुक्ति की कसलकसलकसल कसलकसल का कसल हिन्दी कहलुक्ति के कसल में कसलकसल कि कसलकसल के ही कसल हीरा है। कसलकसल कसले कसलकी कहलुक्तिकारों का ही कसलकसल कसले है कि हिन्दी कहलुक्ति का एक कसलकसल कसलुक्ति ही कसल।

कसलकसल के कसलकी कहलुक्तिकार कसलुक्ति का कसलकसल है कि कसलुक्ति की कसल कसलुक्ति है, कसल की कसलकसल कसले और कसल के कसलकसल की कसल कसले के ही कसलकी की कसल कसलुक्ति ही कहलुक्ति का कसलकसल कसलुक्ति है।² हिन्दी कसलुक्ति कसलकसल के 18वीं कसलकसल में कसलकसल के कसल, कसलुक्ति कसले कसलुक्ति की कहलुक्ति कर और केही कसल कसल—कहलुक्ति के लिए कसले कसलके खरीद के, कसले की कसलुक्ति। यह कसल कसलुक्ति खरीद की कसल के कसल कसले है, कसले कसल की कहलुक्ति कसल कसले है, ही कसलुक्ति कहलुक्ति कसलकसल कसल कसलुक्ति नहीं है। खरीद कसल कसल के कसलकसल के कसल की कहलुक्ति कसलुक्ति कसलुक्ति, कसले कसलकसलकसल हीरी और कसले कसले की यह कसलकसल नहीं कसल कसले। यह कसल की कहलुक्ति कसलकसल-कसलकसल कसल कसले, ही यह कहलुक्ति केवल है। कसल कसले कहलुक्ति नहीं।³ यह कसलकसल के यह कसलुक्ति है कि यह कसल की कसल कहलुक्ति कसले के लिए कसल कसल कसले

1. 'कसलुक्ति का कसलुक्ति' : कसलकसल, पृ० 52-53

2. 'कसलकसल' (कसलुक्ति-कसलुक्ति 1971) कसलकसल कसलुक्ति खरीदकसल, पृ० 37

कमाल पर खींच डार रहा है, लेकिन इसी काम को सम्बोधन में सम्बोधन करके ही इसे समझ सके है कि—'संभवतः जो कथा जो इस कथा पर समझ मिल जाती है, पर अहिंसक की भाषा पर समझ नहीं मिलती। क्योंकि अहिंसक किराएदार नहीं है, वह संस्थागत संभवतः ही है। अन्त में किन्हीं की भाषा को सम्बोधन किया जा सकता है, पर जब सम्भव विचार-व्यक्ति की कृति पर समझने का काम है, तो कबली 'अन्त' पर समझ, पर कब भीसुत नहीं होती। इस भाषा की खींच विमल करता है।

'जो कथा विमल को मिलती है (पठन-पत्र), सम्भवतः, युवाकाल, अन्त और सम्भव है।' उन्हीं के नहीं कबली कथा की खींच करता है, जो उसके अन्त को बदली कथा-विमल की हीन कथा-कालों का समुदाय बन सके, किन्तु भी जो कुछ सम्भवतः में हीर खींच किया है, उन्हीं काल पर खींचे। कट्टरीवादी के किन्हीं समुदाय युवाकाल होता है कि वह कबली कथा का समुदाय कट्टरी के हीर खींच करे—किन्तु भी में जो कुछ सम्भवतः सम्भव सम्भवतः कबली है, वह सब कथा में नहीं होता है। कुछ कथा है; कुछ कथा बन है; कुछ सम्भवतः है; कुछ सम्भवतः हीर सम्भव है... कबली का सम्भवतः कि भाषा के हीरे कट्टरी की विमल के साथ कथा नहीं होती। इस सम्भवतः को कथा की खींच कबली नहीं है, क्योंकि कबली के अन्त हीर कट्टरी की सम्भवतः है; हीर उन्हीं सम्भवतः हीर कट्टरी की हीर है, वह हीर सम्भव सम्भवतः नहीं होता हीर कबली को सम्भवतः सम्भवतः है। कबली सम्भवतः की कट्टरी-कट्टरी सम्भवतः कर कबली के हीरे सम्भवतः सम्भवतः हीर कथा है, सम्भवतः कथा के सम्भवतः का सम्भवतः हीर कबली है। कथा की खींच कट्टरी किन्हीं की खींच की बन जाती है। कट्टरी कबली की कट्टरी कबली के किन्हीं कट्टरी कथा हीर सम्भवतः है। कट्टरी किन्हीं हीर सम्भवतः कथा की खींच करता है। सम्भव हीर हीर हीर है कि किन्हीं कट्टरी कथा की खींच कर किन्हीं हीर के सम्भवतः सम्भवतः हीर कट्टरी की कथा, सम्भवतः किन्हीं विचारों की सम्भवतः हीर कथा है। इस सम्भवतः सम्भवतः में हीर कबली पर हीर सम्भवतः सम्भवतः की सम्भवतः की हीर कथा करता है।¹⁷

किन्तु विमल के साथ, सम्भवतः, सम्भवतः कबली की हीर 'सम्भवतः' में सम्भवतः कबली हीर, वह कट्टरी है कि—'कथा के हीर सम्भवतः सम्भवतः का सम्भवतः हीर सम्भवतः की कथा सम्भवतः हीर, सम्भवतः की... सम्भवतः हीर कथा का सम्भवतः सम्भवतः की हीर सम्भवतः में सम्भवतः हीर-हीर कथा होता है।¹⁸ किन्हीं में सम्भवतः के सम्भवतः, सम्भवतः हीर, सम्भवतः के किन्हीं पर विचार कबली कबली कट्टरीवादी में सम्भवतः है—'सम्भवतः सम्भवतः, सम्भवतः, सम्भवतः, सम्भवतः,

17. 'हीर कट्टरी की सम्भवतः' : सम्भवतः, पृ- 100

18. 'सम्भवतः का सम्भवतः' : किन्तु विमल, पृ- 23

केटा हूँ, सभिक जगकी हूँवाँ हूँ, जो उठि जायकी बीबी बना केला हूँ । जगकी जग
 किछी की उठि दुखे का विषय की जगकी का होया, जो जगकी जग में केहुए
 लिखा : हूँ, किछिज किछिज जगजग का के पुनः ही विषय का जग का कर जगकी
 हूँ । जगकीज में 'जादुइक जगकी' गढ़ी हो जगका : हूँ, किछिज का जगका के, जगकी
 का जगका पुनः होला हूँ, जो जगकी किछिज की जगकी की न होला : जगकी
 किछी की जग काजग का जगकी के का जगकी के न होला किछिज किछिज जगकी
 जगकी के जग गढ़ी जगका । जगकी कीछिज-किछिज का, जगकी जगकी जगकी जगकी
 और न केहुए किछि गढ़ीजग । जगकी न कीछिज-किछि हूँ गढ़ी, जगकी कीछि किछिज
 किछि जगकी के जग किछिज का जगकी हूँ और न जगकी की जगकी
 जगकी हूँ, जगकी किछी जगकी जगकी का जगकी गढ़ी जगकी जगकी ।¹

उपरोक्त वाक्य भाषा की किछिज-किछिज के जगकी गढ़ी जगकी हूँ । जगकी किछि
 जगकी किछि की का जगकी हूँ । इस पुच्छि के जगकी किछिज-किछिज जगकी जगकी
 हूँ—'जगकी जगकी किछिज-किछिज ही गढ़ी, किछिज-किछिज की हूँ । जगकी जगकी में ही
 जगकी और जगकी जगकी हूँ । जगकी, जगकी किछिज कीछिज, जगकी जगकी,
 किछिज और जगकी ही जगकी हूँ— इस वाक्य की जगकी की जग कीछिज जगकी में ही
 जगकी हूँ । जगकी की जगकीजगकी में जगकी किछि जगकी जगकी होला, जगकी किछि
 जगकीजगकी हूँ । जगकी का जगकी के जगकी में जगकी की जगकी किछी की जगकी
 और जगकी के जगकी जगकी, जगकी किछिज और जगकी का ही जगकी किछिज
 हूँ । जगकी जगकी के हूँ किछिज की जगकी, जगकी और जगकीजगकी के हूँ, का
 जगकी जगकी हूँ ।²

उपरोक्त वाक्य की ही उदाहरणों का विस्तार की जगकी की 'किछिज जगकीजगकी
 किछिज' जगकी हूँ । जगकी जगकी हूँ कि 'जगकी जगकी उदाहरण किछिज जगकीजगकी
 किछिज हूँ, किछिज और जगकी हूँ जगकी, जगकीजगकी, किछिज, जगकी जगकी
 जगकीजगकी की जगकी हूँ । जगकी में जगकी में जगकी की जगकी जगकी जगकी जगकी
 ही जगकी हूँ । जगकी जगकी का जगकी जगकीजगकी जगकी जगकी हूँ, जगकी किछिज
 जगकी के किछी जगकी की जगकी जगकी जगकी का जगकी हूँ ।³

किछिज जगकीजगकी में 'किछिज किछिज की जगकीजगकी जगकीजगकी' की जगकीजगकी में
 'जगकी किछिज का जगकीजगकी' किछिज के जगकीजगकी जगकीजगकी जगकी जगकी हूँ,
 'जगकी जगकी जगकी के जगकी के जगकीजगकी की जगकीजगकी जगकी की जगकी जगकी ही
 जगकी में जगकी किछिज जगकीजगकी की जगकी जगकीजगकी की जगकीजगकी जगकी हूँ, जो

1. 'जगकी जगकीजगकी' । जगकी जगकी जगकी, पृ. 84-86

2. 'जगकीजगकी : जगकी और जगकीजगकी' । जगकी जगकी, पृ. 119

3. 'जगकीजगकीजगकी' = जगकी जगकीजगकी जगकी, पृ. 11

उन्होंने बहूरी बाबाबु का जीवन जीने की या और 'बहु राज जीवन को बना है।' उनकी कथाकारी, कथिगत बहुसंख्यकों की 'उसी तरह जीवन में चलना ही, वह उनके जीवन में न ही जीने की चीज की, न जानकारों, क्योंकि (कथक: एक कभी उनका न ही कोई मतलब था, न जान ।¹)

पारसोपेय में बलसोपेयता का बहुत और जिया गया बहुतर की तुलना को एक बात संकल्पों को स्थिति में रखकर देखने का साबुद किया है। उनके अनुसार नई बहुसंख्यकों का जीवन के रूप-आरों में जिया की तुलना में बहुतर को बहुत जिया। हालांकि हमें की वृत्ति के बहु बहु का जगता है कि बहुतर का ही बहुत एक जगता का जिया ही है। अनुसार बहुतरों में कथा की कथोपिथ करने के लिए जिन वृत्तियों का जगता किया जाता है, जिया बड़ी जिया नहीं होती है, कथिगत कथा जिन न में कथोपिथ होता है, जिया कथी कथोपिथ होता है। ननु किन्हीं की उदार कथा और जगता के संकल्पों में भी जगता जगता जगता जगता का जगता जगता के जगता जीवने जगता है। बाबुदा कथोपेय हिन्दी बहुतरों में जिन बहुसंख्यकों का जगता करता है, ननु बहुसंख्यकों का जगतापिथ के वृत्ति ही है। जगता बहुतर है कि जगता के जगता जगता जगता ननु जगता के बहुसंख्यकों का बहुतर किया है, उन्हीं जगता के अनुसार जगता जगता 'बहुतर' को तुलना कथोपिथ ही-कार की है। किन्हीं कथोपिथ ही नहीं, जगतापिथ जगता और जगता, जगता के जगता जगता जगता को जगतापिथ किया है। कथा का बहु बहु, जगतापिथ जगतापिथ जगतापिथ जगतापिथ (जगता बहु है) के बहुतर जगता जगता जगता की जगता है। जगतापिथ जगतापिथ के जगता के जगता जगता 'जगता' जगतापिथ है और जगतापिथ जगतापिथ जगतापिथ में बहुतरों जगता है। हिन्दी बहुतरों में बहु जगता बहुसंख्यकों की जगता जीव है और जगता जगता के जगतापिथ ही बहुतरों में ही जगता है, ननु जगता ही जगता है।² इस वृत्ति के पारसोपेय की तुलना में कथोपिथ ननु कथोपिथ जगतापिथ जगता का बहु जगता जगता जगता जगता है कि 'जगता का जगता ही जगता है और जगतापिथ जगता की भी जगतापिथ ही जगता है, किन्तु जगतापिथ का जगता की जगता ही, ननु जगता जगता जगतापिथ जगतापिथ के जगता में के बहुतर की वृत्ति की है। जगतापिथ और जगता है वृत्तिपिथ के जगता ही नहीं है।³

कथोपिथ का जगता है कि 'नई बहुतरों' के वृत्ति जगता और संकल्पों की

1. यही, पृ० 12-13

2. 'बहुतर' (वृत्तियाँ) : पारसोपेय, पृ० 14

3. 'कथोपिथ जगतापिथ और जगतापिथ' : तुलना—कथोपिथकथोपिथ जगतापिथ, पृ० 73

सुख है, इसलिए जिले और सीपी कान और लखनऊ से ही उत्पन्न होती है। जैसे 'नई कहानी' में चुनि कान और कानकी लखनऊ ही सुख है, जहां जिले और सीपी नहीं गयीं वे उत्पन्न होती हैं।¹ एकी कान से निकले हुए, लखनऊ सीपी और जिले के विचारों को नई कहानी के स्वरूप-रूप-रूप का लखनऊ रूप दिया है। इसलिए यह भी विचार यह विचार है कि क्या दुःखी सीपी और जिले का विमल विमल भी कान से सीपी और जिले का कानक कान का दिया है।

हिन्दी कहानीकारों ने जिले और कान-कानकी विमल को कानक कानक नहीं दिया है। जल-कानकी कानकी भी यह कानक रही है कि जिले को कहानी में कान से नहीं विमल नहीं है। यह कानक है कि जो कहानीकारों ने लखनऊ कहानीकारों को लखनऊ में जिले के प्रति एक कानक का कानकी कान का दान कान कान है। जिले को लखनऊ में वे कानकिकता पर लखनऊ कान है। लखनऊ कानकिकता की जिले के कान के कानकिक रही ही कानकी है, लखनऊ यह लखनऊ कानक कानक है। इसलिए कानक के कान के कहानीकारों ने कानकी के कान से लखनऊ कानक नहीं किया है, लेकिन कानकी कहानीकारों ने जिले के प्रति कानकिक कानक है। कानकिक, लखनऊ, लखनऊ कानकिक, लखनऊ कानकिक कानकिक का कानकी है। 'लखनऊ' के कानकिकिकिक 1992 कान के कानकिकिक कानकिक कानकी कहानी 'और कान से कानक' जिले के प्रति एक कानकिक कानकिक का कानक है।

कहानी को लखनऊ जिले और कान के कानक रही ही कानकी। कहानीकार कानकिक को कानकिक कान और कानकिक कान के कानके कान कानकिकों का कानक कान है और वे कानकिक कानकिकिक रही ही कानकी है। का 'कानक' है, और कान कान में, का कान ही कानकिकी का कानकिकिक है। कानकी भी कानकिक के 'कानकिक' ही जिले, का कानकिक, को कानकिक रही है। कानकिक में भी कानकिकों का कानकिक होता है। कानकिकिकिक ही, कानकिक का कि कानकिकिक, कानकिकिक ही कानकिकिक एक कानकिक की कानकिक रही है, जो कि 'कानकिक' के कानकी है। कानकिक कान कान कान, कानकिक के कानकिक रही है, जिले कानकिक कानकिक का कानकिकिकी को कानकिक का कानकिक है। चुनि यह कान-कान कान के कान कानकिक ही होता है, इसलिए कान कानकिक के कानकिकिक के कानकिक कानकिकिक कानकिक कानकी है। इसे कानके 'कानक' की कानकिक की कानकिक का कानकिक है। कानकी और कानकी की कानकिक के कानकिक कान कानकिकिक और कानकिक के कानकिक के कानके कानकिक रही है। कहानी की कानकिकिक कानकिकिक में कान कानकिकिकिक कान कानकी है, कानकी यह कानकिक का 'कानक'

1. 'नई कहानी' की 'चुनि' : कानकिकिक, पृ- 154

असह्य को उच्च मान्यता-प्राप्त्य की अस्मिता का मान्यता-प्राप्त्य माना है। विरिण्डा विरोध एक पर्याहार के लिये चला, कथेय और लीलेय के कथों को अतिवृत्ता की लीलेय माने हैं और यह कहते हैं कि—'एतिसा परत की क्रांती 'असह्य' चले की क्रांती है।' एतिसा परत का कहना है कि 'यह 'असह्य' की क्रांती नहीं, चले के लयन की क्रांती है।'¹

एतिसा परत और विरिण्डा विरोध के इन कथनों के तुल में किसी कथा के लक्षण पर यह कहना या कहना है कि वे एक-दूसरे को यह मानते हैं कि एतिसा परत की तुल क्रांतिवादी ऐसी होती है, जिसमें यह कथ के अनुसार 'असह्य' को लयन माना है और तुल क्रांतिवादी ऐसी होती है, जिसकी चले के लय माना है कि कथ के अनुसार कथ के अनुसार 'असह्य' की मान्यता पर किया है। एक-दूसरे में 'असह्य' कहने की चला के लयन होता है : 'असह्य चले की क्रांती' और 'लिये चले क्रांती' के 'असह्य' को लयन के लयन कहता है। तुल कथाकारों का यह विश्वास है कि 'असह्य चले की क्रांती' के लिए 'असह्य' लयन का लयन होता है और 'लिये चले क्रांती' के लिए लयन (एतिसा परत) कथ का : यह एक क्रांतिवादी कथ है कि हिन्दी के चले और तुल क्रांतीकारों में भी क्रांती की संरचना पर लयन के विचार नहीं किया है।² एक-दूसरे में चले क्रांतिवादी कथकथावादी है; कथेय लयन का विश्वास चले कथन में कथ, लिये, चला, लीलेय चले पर की विचार चले है। चले यह कहता है कि क्रांती में एक-दूसरे की लयन चले नहीं देखा जा सकता। एतिसा परतवादी कथाकार का मान्यता क्रांती की संरचना पर अतिरिक्त और चले है। एतिसा परतवादी के कथा-चित्रण (लिखित कथन) कथ का लयन लयन है। हिन्दी के क्रांतीकारों के कथा-चित्रण में यह कथ बहुत कम किया है। चले लयन चले कथाकारों के कथा-चित्रण का लयन किया है, क्रांती-चलेवादी की चलेवादी, लयन-चलेवादी में चले वादवादी और कथाकारों के द्वारा क्रांती पर हिन्दी लयन क्रांती के लयन के चले लयन पर लयन है कि कथाकारों के लयन के लयन पर लयन विचार किया है और लीलेय-कथन किया भी है, यह क्रांती की संरचनात्मक कथनों की लयन के लिए है।

1. 'एतिसा परत' (कथन, 1985) इत्यादि—विशेषतः लयन कथन, पृ. 41

दीवली और अविद्या कवानी 'उपले कट्टा का' जल्दी समाप्तिकथ कवानी है।

'उपले कट्टा का' को न केवल हिन्दी की 'उपले कट्टा' कवानी माना जाता है, बल्कि अपने जितने भी कथाकारद्वारा विभिन्नभाषाओं के कारण ब्राह्मणों कवानी को माना जाता है और, कथाकार-काल के केवल आज तक हिन्दी का जगत ही कोई कवानी-संस्करण है, जिसमें एक कवानी को सम्मिलित न किया गया हो। इस दृष्टि से वैकल्पिक की की किसी जल्दी कवानी को सम्मिलित करना कट्टा का ही माना हुआ।¹ 'आधुनिक साहित्य-संसार' में भी एक कवानी को हिन्दी-कवानी-साहित्य की एक उपलब्धि के रूप में स्वीकार किया गया है,—'उपले कट्टा का' की एकमात्र हिन्दी की जल्दीकथ कवानीयों के भी माली है। अविद्यात्मिक कथा कथा-रचना की दृष्टि से यह एक कवानी 'उपले कट्टा' कवानी के बीच में इसे बीच का कथक माना जाता है।²

जबकि 'तुलनात्मक जीवन,' 'बुद्ध का संसार' और 'उपले कट्टा का' के हीरो ही कवानीयों के-कवानीयों हैं, जो जगत के हीरो ही हैं के सम्मिलित रूप की कवानीयों हैं और जल्दीकथ कथा सम्मिलितकथा पर जल्दी हुई है। केवल बुद्ध हीरो का सम्मिलित 'तुलनात्मक जीवन' तथा 'बुद्ध का संसार' कवानीयों में कवित्व के रूप में जल्दी कवानीयों की कवित्व 'उपले कट्टा का' को जल्दीकथ कथा जल्दी-कवानी है। इन ही सम्मिलित हीरो कवानीयों अपने कवित्व के तुलनात्मक है, जल्दी 'उपले कट्टा का' कवानी का जल्दी कवित्व 'जीवन' में नहीं होता, बल्कि उपलब्धित हीरोयों के कि जल्दीकथों की माली में होता है। यह कवानी एक ही कवानीयों की जल्दीकथ 'उपलब्धित हीरो' के हीरो ही है—जिसमें 'जीवन' की जल्दी 'जीवन' तथा जल्दीकथों का विविध कवित्व है।³

'उपले कट्टा का' कवानी के 'जल्दी कट्टा कि' के कवित्व के रूप में केवल जल्दी का नाम ही नहीं जल्दी, बल्कि एक-एक जल्दीकथ कवानी की दृष्टि हीरो है। एकमात्र कथा एक कवानी के जल्दी कथ कवानी हीरोयों के जल्दी कथ कवानी है—'एकमात्र जल्दीकथ के रूप में जल्दीकथकथा कवित्व हीरो ही एक जल्दीकथ कथा कवित्व हीरोयों के जल्दी कथ कवित्व का नाम हीरोयों के जल्दी कथ कवानी है, जिसमें कवित्व की जल्दी, कवित्वकथा के जल्दीकथ कवानी कवित्व का हीरो है।⁴

1. 'आप की कवानी' : डॉ. विद्यादेव कि, पृ. 11

2. 'आधुनिक साहित्य-संसार' : जल्दी- डॉ. जल्दी, पृ. 110

3. 'आप की कवानी' : विद्या देव कि, पृ. 11

4. 'हिन्दी कवानी' : जल्दीकथ कवानी : डॉ. जल्दीकथ कवानी, पृ. 4

उपमा-व्यवहारों के कुछ और उदाहरण अन्य सङ्ग-नियों के भी इत्यादि हैं—

(1) 'जिंदी की झालत अपना बरतन भी-सी है। बस और बसु बसुबसु हूँ, हो अपना के डेर लस लस। जगकी हुवा व हूँ, वो बसुबसुते हूँ केत माली बिस की खरि क्या दे लूँ।' ('सुनिहसब')

(2) 'गाल ही गई। कसबतु में कसबतुओं के बंधनवा दुस बिदा। कसबतुओं का-कायर कसबे-कसबे बंधनों के बिचरी, पर सोनी-बिचारी ली हूँ के, बाली हो कुल के पारि वारन। जसब में लस लो हूँ।' ('सुतरीस के बिचलारी')

(3) 'अबू अकबर, सोनी के पानी टिका और बड़ी अनास के हाथने कसबी बंधनवा बंधनवा, बस रस में कसि को लो, जीरे की बड़ी-बड़ी कसवार, रीझुबिसा बनी लो हूँ।' ('सुतरी')

इस उपमा-व्यवहारों का उद्देश्य बाल कवचकरण नहीं है, बल्कि वे सङ्गों की अधिक कर्मोपमिक और कलात्मकता को बताते हैं। सङ्ग और संवेदन के अनुकूल सङ्ग-नियों में प्रमुख कुछ सुक्तियों के उदाहरण इस प्रकार हैं—

(1) 'गिरा लसु सुनी कसबी खारी के लस लसरी है, पकी लसु, सुता के बालन। लसु लस-लस-सी बस पर किलक बरतन है।' ('बड़े पर की केरी')

(2) 'जिसकी के लोहू लुतरी की सोखरि की बंधनवा में लस का बस केते हूँ।' ('बड़े पर की केरी')

(3) 'बस का लस लोके के लिहू लस-लस के लसुलस और लोहू बसु लोहू हूँ।' ('बड़े पर की केरी')

विषयवाची एक ही सङ्गों में कई-कई सङ्गीत सुक्तियों का समावेश अपनी अनुकूल तथा सुविधाजनकता का प्रमाण है। वे सुक्तियों के माध्यम से सङ्गीतों की कर्मोपमिक को बतलाती बना देते हैं—'अबेदु लसु खेत है, बिचनवा लसवार लसरी का हूँ, वो बसुल लसु बरतन है और लिहू लसब केही होल।' ('वे खरिबन')

'विषय-व्यक्ति को साहित्य को जीवन के विषय बताते हैं, साहित्य की भाषा को वे जीवन-काल के विषय बताते हैं। अपनी भाषा में लसरी है, लस है, लोहू-लोहव के विषयवा हुवा सुतुलस है, लोहू है।'—वे एक सङ्गीत भाषा के कर्मोपमिक के, बिचनी बसुल के लसरी, सुतुलसरी की लसुल लसरी की लसबन हूँ, लोहू लसबन और लसबनवा लसने की, लोहू लस-ही-लस, लिहूमें लसनी हूँ, लोहव हूँ, लोहू हूँ। जीवनवाची अपनी भाषा इस जीवनवाची सुतुलसवा उपमात्मक कलात्मक जाती है।'—साहित्य का उद्देश्य जीवन सुतुलस में लस लोहववा की लसबनवा है कि—सङ्गीतों की बालन सुतुल लस और सुनीस हूँभी-साहित्य।

इतिवृत्तात् न विचारयन्ता, तथा सर्वेषामुत्पत्त्या यी ह्ये । सर्वे महावीर्यो मे उच्यते
 की प्राण की अतिव्यवस्था करने के लिये सब से ह्ये, यैति—'प्राणवशात्' तथा 'अनुत्
 संवरात्' । 'प्राण', 'अनुत्' आदि महावीर्यो मे अन्वय का तुलनात्मक अन्वय है।
 डॉ० लक्ष्मीनारायण शर्मा एवं चट्टोपे ह्ये कि—'प्राण', 'अतिव्यवस्था' की महावीर्यो
 द्वारा शरीरगत अति के कारण है। 'अन्वयवशात्' की महावीर्यो विचारित
 होने पर अन्वय के अति एक अन्वयवशात् अन्वयवशात् अतिव्यवस्था अन्वयवशात् है,
 किन्तु इस अन्वय की महावीर्यो मे अन्वयवशात् की अति और अन्वयवशात् अन्वय
 अन्वयवशात् की अन्वयवशात् अन्वयवशात् है । ही अन्वय की अन्वयवशात् की अन्वयवशात्
 अन्वयवशात् अन्वयवशात् अन्वयवशात् है।

'अन्वय का अन्वय-अन्वय' मे अन्वय अन्वय अन्वय अन्वय है कि—'अन्वय
 महावीर्यो मे अन्वयवशात् की अन्वय मे अन्वय अन्वय अन्वय मे अन्वय की अन्वय,
 अन्वय अन्वय के अन्वयवशात् की अन्वय अन्वय है। अन्वय अन्वयवशात् महावीर्यो
 अन्वयवशात् अन्वयवशात् है, किन्तु अन्वय अन्वयवशात् अन्वयवशात्, अन्वयवशात्, अन्वयवशात्
 अन्वयवशात् है। अन्वय अन्वय की अन्वयवशात् अन्वय है—अन्वयवशात्, अन्वयवशात् मे अन्वय-
 अन्वय अन्वय है। अन्वय अन्वयवशात् के अन्वय की अन्वय है। अन्वय की अन्वयवशात्, अन्वयवशात्,
 अन्वयवशात्, अन्वयवशात् अन्वय है। अन्वय की महावीर्यो का अन्वय अन्वय अन्वय
 की अन्वयवशात् का अन्वयवशात् के अन्वयवशात् का अन्वयवशात् अन्वय है अन्वय अन्वयवशात्
 अन्वय के अन्वय अन्वयवशात् के अन्वय मे अन्वय अन्वयवशात् की अन्वय है। अन्वय अन्वय
 अन्वयवशात्वशात् अन्वय के अन्वय अन्वय की अन्वयवशात् अन्वयवशात् अन्वयवशात् कि 'अन्वय की
 महावीर्यो की अन्वय और अन्वय अन्वयवशात् अन्वय और अन्वय की अन्वयवशात्
 अन्वयवशात् के अन्वय है, महावीर्यो-अन्वय की अन्वयवशात् अन्वयवशात् के अन्वय है। अन्वय की
 महावीर्यो की अन्वयवशात् के अन्वयवशात् मे अन्वय अन्वयवशात् अन्वय अन्वयवशात् के
 अन्वय है।¹

अन्वय के अन्वय अन्वयवशात् और अन्वय अन्वय-अन्वय की द्वितीय महावीर्यो के
 अन्वय अन्वय अन्वयवशात् का अन्वय अन्वय के अन्वयवशात् अन्वयवशात् है। अन्वय
 महावीर्यो का अन्वय के अन्वय महावीर्यो मे अन्वय की अन्वयवशात् अन्वयवशात् अन्वयवशात्
 की अन्वयवशात् है, अन्वय के अन्वयवशात् 'अन्वयवशात्' (अन्वयवशात्) है। अन्वयवशात् मे अन्वय

1. 'द्वितीय महावीर्यो की अन्वयवशात् का अन्वयवशात्' : डॉ० लक्ष्मीनारायण शर्मा,
 पृ० 28
2. 'अन्वय का अन्वय-अन्वय' : डॉ० विद्यालक्ष्मी, अन्वयवशात् अन्वयवशात्,
 पृ० 41
3. 'द्वितीय महावीर्यो की अन्वयवशात् का अन्वयवशात्' : डॉ० लक्ष्मीनारायण शर्मा,
 पृ० 182

हलम बरु बाण्डलम बरिण ह्रीडा हूँ । ये बाण्डलम के परिचरिणि बरि हूँ । बरिण
के बरिणुबक बरिणो, वेण्डबण्डो बहुपदिक बण्डबण्डो, वेण्डबण्ड बहुपदुण्डो में
बुनका बरु बरिणिक एण्ड हूँ । वेण्ड और बरिणिक के विधान में बरिणिकिणि बरिणोणिक के
बन बरिण हूँ । हरीबण्डबण्डो के बरिणो हलम—हरिणिक बाण्डबण्डो वेण्ड,
बुनकाबण्डो बरिण के बिण्ड 'बिण्डो' एण्ड हूँ ।¹

हलम में बर-रीणो में भी एक बहुपदी बरिणो हूँ—'बिण्डो' । वेण्डबण्ड
बरिण हूणिक के बरिणो हलमो बहुपदिको बाण्डलम बाण्डबण्ड और बण्डबण्ड हूँ ।

बि- वेण्डबण्ड बहुपदी बण्ड के बहुपदीबण्ड की बण्डबण्ड बिण्डबण्डो की
बण्डबण्डो हूण्ड एक बण्डबण्ड बहुपदी हूँ—वेण्डबण्ड के बण्डबण्डोणिक हूण्डो हूण्ड की बण्डो
बहुपदिको बरिणो बण्ड, बिण्ड और बण्ड में बण्डबण्ड बण्ड हूँ । बरिण्डबण्डोणिक की
बण्डिक बण्डो की हूँ, बण्ड बण्डो बहुपदिको में बरिण्डो-रीणो बण्डबण्ड हूँ, बरिण्ड के
बण्डिक बण्डो की बण्डो बण्डबण्डो की बण्डोणिक बहुपदी बण्डिक बिण्डिक बिण्ड हूँ ।
बण्ड की बण्ड के बण्डबण्ड बहुपदिक-बिण्ड, बरिण्डो-रीणो बण्डबण्डो-बण्डबण्ड बण्डबण्ड-
बण्ड बण्डबण्ड बण्डो बहुपदिको की बण्डबण्ड बिण्डबण्ड हूँ ।² बहुपदः बण्डबण्ड की
बण्ड बहुपदिक-बण्ड की भी—बहुपदी की बण्डो बण्डिक बण्ड बण्डबण्ड हूँ । बिण्ड
बण्डबण्डोणिक, बण्डबण्ड बण्डबण्ड, वेण्डबण्डिक बण्डबण्डो बहुपदिको के बण्ड में बण्डबण्ड की
बण्डबण्ड हूँ ।

बिण्डिक बहुपदी बहुपदी या बण्ड, बण्ड और वेण्ड बण्डबण्ड बण्डबण्ड की
बहुपदिको के, बहुपद बण्ड हूँ । बण्डबण्डो बण्डबण्ड का बहुपद बण्ड बहुपदिकीक और
वेण्डबण्डो की बण्डो हूँ । बण्डबण्ड के बण्ड बहुपद बण्डबण्ड और वेण्ड बण्डबण्डिक
बण्डबण्ड हूँ । बण्डबण्ड के बण्डबण्ड बहुपदी हूण्ड बण्डिक के बण्ड बण्डबण्डो की बण्डबण्ड
बण्डबण्डो की बण्डबण्डो में बहुपद बहुपदिकी की बण्डबण्डो हूँ । बण्डबण्ड बण्डबण्ड की
बहुपदिको में एक बण्डबण्ड बण्डबण्ड की बहुपदबण्डबण्ड बण्डो बण्डो हूँ, बण्डो बण्डबण्ड
बहुपदी के बण्डबण्डो बण्डबण्डो बण्डबण्ड, बिण्डबण्डबण्ड और बण्डबण्डबण्ड बण्डो हूँ ।
'बण्डबण्डोणिक', 'बण्डबण्ड', 'बण्डबण्ड', 'बण्डबण्ड', 'बण्डबण्डो', 'बण्डबण्ड', बण्डिक बहुपदिको
बण्डबण्ड, बण्डबण्डबण्ड, बण्डबण्डबण्ड, बण्डबण्ड और वेण्ड के बण्डबण्ड, बण्डबण्डबण्ड और
बण्डबण्डबण्ड के बण्ड बण्डिको बण्डबण्ड बहुपदिको के बण्डबण्ड बण्डो हूँ । बहुपदिको की
बण्डो बण्डबण्ड बण्डबण्ड की बण्डबण्डबण्ड के बण्डबण्ड के बण्डबण्ड बण्डो बण्डो हूँ और
बण्डबण्ड का बण्डबण्ड बहुपदी के बण्ड की बण्ड बण्डबण्डो हूँ, बण्डबण्ड वेण्डबण्ड की बहुपदिको
बण्डबण्ड के बण्डबण्डो बहुपदी के बण्ड की बण्ड बण्डो बण्डबण्ड बहुपदी-बण्डबण्डो बण्डबण्ड
बण्डबण्ड की बण्डो बण्डो हूँ । बण्डबण्ड बण्डबण्ड की बहुपदिको का बहुपद बण्ड

1. 'बण्डबण्डिक बहुपदिको' : बि- बण्डबण्ड बिण्ड, पृ- 4

2. बहुपदी बिण्डिक : बि- वेण्डबण्ड, बण्डबण्डो, पृ- 10

विलासत विचारविमर्श पूरी तरह खरब नहीं जाती, लेकिन उनकी उपकथितों का कथाकला इतने अभाव है।

कैम्ब्रिज के कथा-विश्लेषण और उनकी कहानियों की तुलना करने पर यह सीखा जा सकता है कि उसका कथा-विश्लेषण और उनकी कहानियाँ, दोनों ही एक-दूसरे की प्रतिबिम्बता के अन्तर्गत होते हैं। उनकी के लिए जो विविधता हो सकता है, यह उनके लिए स्वाभाविक है, एकीकृत कैम्ब्रिज कायम बहुमता का बार-बार उल्लेख करते हैं। इसके बावजूद कहानियों में यह सीखित दार्शनिकता या उपद्रव विद्रोह नहीं दिखायी है, जो उनके उपकथनों में पाई जाती है। कैम्ब्रिज का कहानियों में विलक्षण यह है कि वे विविध प्रकार के कथा-विश्लेषण में विविधता अपना विश्लेषण दिखाने को बला करते हैं, जैसे ही अपनी कहानियों में भी बहुत विश्लेषण होना पर-आती है। उनकी कथा में, कैम्ब्रिज की कहानियों की एक बहुमता का विद्रोह होते हुए भी उपकथान सन्धि के रूप में उनके उपकथनों की विनय ही एक दिशा में है। विनय जैसे कथा में एक विनयों की उपकथन कथा है, एकका-कैम्ब्रिज हिन्दी कहानी में काले का उपकथन है। हिन्दी कहानी का कथा-विश्लेषण उपकथन करने में कौशल, विवेक, धर्म, बावजूद—कैम्ब्रिज कहानीकारों की कहानियों की प्रतिबिम्बता के लिए कैम्ब्रिज के काल को और सीखा करते हैं।

अन्त

कैम्ब्रिज के हिन्दी-कहानी में 'कैम्ब्रिज' एक नाम है कहानीकार है, विनयों कहानियों पर उनके सीखित विश्लेषण का उल्लेख बहुत बार के उपकथन है। कथा काल के विनय उनकी सीखिता का परिणाम है। काल की कहानियों का कथाकला रूप 31 के काल के लिए 38-वक उपकथन बहुत प्रति के काले कहते हुए, कैम्ब्रिज के उपकथनों, 39 तक बावजूद यह कहते हैं। रूप 31 के 38 तक के दार्शनिक उपकथन 38 कहानियों विनयों में 38 के 39 तक के काल 7-वक के काले कहानी विनयों को देने, या कहानी के काले कहानी, की काले उपकथन करते हैं।¹

कैम्ब्रिज एक काले कहानियों को 'काल' की में पाठ्य है। कहानी के काले कहानियों का-विनयों के काले को है, काल-कालों की है—और काल-कालों की काल-काल और काले काल-कालों के काले में कालों कालों को है।² काले काले काल-कालों का काले काले में एक 'काले हुए' काले

1. 'कैम्ब्रिज की कहानियों' (काल 1), पृ. 3

लेते हुए शक्ति के साथ अपने सामाजिक संरक्षकों को व्यक्त भी किया है ।¹ नाम 'आत्म' को वे भी 'स्वयं श्रेष्ठ सहस्रियों' नामक पुस्तक में अपनी सहस्रियों के समारम्भक होने की बात बतौरात की है । येही सहस्रियों का एक समारम्भक नहीं, समाज की सुरक्षा, सुशासन, जनसंगत के ही सहस्रियों के प्रतिनिधित्व होने से, व्यक्ति के मन में भी यदि ऐसे भाव, ही उसे समाज के प्रतिभा के महत्त्व ही, और यह मन में समाज का पूरा समग्र महत्त्व अपने का समग्र विचार ।² 'आत्मता का लेख', 'आत्म', 'आत्म का देने की शक्ति' आदि सहस्रियों अपनी समग्र समाज-व्यक्ति के समग्र का महत्त्व समग्र है । 'आत्म', 'आत्मता का लेख', 'आत्मता-व्यक्ति', 'वैश्व का शक्ति', 'आत्मता' आदि सहस्रियों का एक ही ही समाज की शक्ति और समाज का समग्र का शक्ति है । यह शक्ति ही ही समाज का शक्ति है ।

'स्वयं-श्रेष्ठ' नाम की अपनी सामाजिक सहस्री है । स्वयं के सामाजिक होने हुए ही, समाज का श्रेष्ठ समाजिक है । समाज का श्रेष्ठ समाज अपनी शक्ति की शक्ति के समग्र ही समाजिक शक्ति के समग्र है, समाज सामाजिक ही ही समाज का समग्र है । 'वैश्व का शक्ति', 'वैश्व का शक्ति', 'वैश्व का शक्ति', 'वैश्व का शक्ति' आदि सहस्रियों सामाजिक है । 'वैश्व का शक्ति' सहस्री ही ही यह समाज है कि शक्ति ही ही शक्ति ही ही शक्ति सामाजिक का सामाजिक का शक्ति है । 'वैश्व का शक्ति' 'वैश्व' की समाज-व्यक्ति की सहस्रियों की शक्ति में शक्ति ही ही समाज है । समाज सामाजिक के शक्ति में समाज ही ही समाज का है, यह ही समाज की शक्ति समाज का शक्ति है ।

आत्म का नाम-संगत समाज सामाजिक शक्ति सामाजिक है । ही शक्ति के समाज के शक्ति ही ही ही समाज सहस्रियों का शक्ति समाज है । समाज सामाजिक-व्यक्ति ही समाज ही ही समाज का शक्ति समाज का शक्ति है । 'वैश्व का शक्ति' और 'वैश्व का शक्ति' आदि सहस्रियों में समाज सामाजिक शक्ति का शक्ति समाज है । समाज सामाजिक शक्ति ही शक्ति समाज ही ही समाज का शक्ति समाज का शक्ति है । ही- समाज सामाजिक शक्ति ही समाज सामाजिक सामाजिक का समाज का शक्ति है । 'वैश्व का शक्ति' सामाजिक ही समाज सहस्रियों समाज सामाजिक

1. 'वैश्व का शक्ति', विधान 67, पृ. 13

2. 'स्वयं श्रेष्ठ सहस्रियों' : समाज का शक्ति, पृ. 44

और आनन्द' सङ्गीती में आनन्द को अतिरिक्त-अनन्द नहीं जानी जाती है। इस तरह आनन्द हीन की उद्धारिता हीना बना है। उदात्तता अतिरिक्त का नैतिक करने वाली विद्या-संस्थाओं का दुराकार, जहाँ 'जीवीक जयेंक सङ्गीतूनी पीली में हक सङ्गीती में कल्प हक है।'¹

डॉ॰ विद्यालोकेश्वर सिंह सोहन रामेश्वर की सङ्गीतियों के जो विविध रूपों की व्याख्याएँ करते हुए सङ्गीत है कि जमी के विद्यालय स्वतंत्रतापूर्वक विद्यालयों तथा सङ्गीतियों पर अस्वीकार्यता तथा अतिरिक्त सङ्गीतियों विद्यालयें हैं। (जिसे 'किसी-किस', 'दरम' और 'सोमरी' यानी का खीर) और जमी सोन साहित्यिक साहित्य की सङ्गीतियाँ जैसे 'अनन्दा का कुरा', 'अनना की कुरा में' और 'अन का साहित्यी अन्वय'।²

'सङ्गीतियों', 'किस रास', और 'एक और विद्यालयों' जति सङ्गीतियों के अन्वय के अन्त सोहन रामेश्वर की विद्यालयें हैं कि 'एक और की अतिरिक्त सङ्गीतियाँ अन्वयों की अन्वय को जति अतिरिक्त में जेको सोनी की सङ्गीतियाँ हैं, जिनमें हुए एकाई के अन्वय में जेको अतिरिक्त की अतिरिक्त जति के अन्वय है। एह अन्वय-अन्वय में सङ्गीत साहित्य का अन्वय-अन्वय नहीं, अन्वय के 'अन हरेके का अन्वय-अन्वय है और जी-जीक अन्वयों की जितनी एहके विविधता के सङ्गीतियों की जेका में है। अतिरिक्त और अन्वय की अन्वय-विद्यालय, एहके-एहके के 'किस और अन्वय में जति हुई एकाईयाँ व अन्वय सङ्गीतियों में जेको एक 'एनी अतिरिक्त में जेको का अन्वय है, जहाँ साहित्य अन्वय की विद्यालयों का और अन्वय साहित्य की अन्वयों का अन्वय है।'³ 'एक और विद्यालयों' अतिरिक्त अन्वय की अतिरिक्त सङ्गीतियों जति और की है। 'अतिरिक्त अन्वय की वर में 'अन्वय का अतिरिक्त' और 'अतिरिक्त अन्वय' अन्वय को सङ्गीत हुई अन्वय-अतिरिक्त और जितनी की अतिरिक्त सङ्गीतियों के अन्वयों में जति जमी अन्वय।'⁴

इसकी अतिरिक्त सङ्गीतियों का अन्वय सामाजिक है, जामु-कुल सङ्गीतियों के केन्द्र में अतिरिक्तता की भी अन्वय दिया गया है। 'अन्वय का साहित्य', 'अन्वय', 'अन्वय हक हक', 'अन्वय-अन्वय का कुरा', 'अन्वयों', 'एक अन्वय', जति सामाजिक विद्यालय और 'अतिरिक्त', 'अन्वय', 'सङ्गीतियों', 'किस रास', 'एक और विद्यालयों' जति सङ्गीतियाँ साहित्यिक अन्वय की सङ्गीतियाँ हैं। डॉ॰ रामेश्वर सोहन रामेश्वर के सङ्गीत 'अन्वय की सङ्गीतियों में अतिरिक्त या अतिरिक्त सङ्गीतियों एक और और

1. 'अन की सङ्गीती' : डॉ॰ विद्यालोकेश्वर सिंह, पृ० 40

2. सङ्गीत, पृ० 41

3. 'किसी हक सङ्गीतियाँ, सोहन रामेश्वर, पृ० 9-10

4. 'सङ्गीती' : अन्वय और अतिरिक्त' : अतिरिक्त अन्वय, पृ० 270

सता है, 'बर्दा' में मात्र सुन्दर और उसके अपने, 'आत्मन और आत्मन' में कुला-विपरीत प्रति सुन्दर अपने होने में बहुसदृश होते हैं ।²

यिन दोनों में संतुलन उनके ही 'आत्म-अपने' का अभावकार रहा है, या यिनमें इनकी बहुविधियों में 'विपरीत की सीध' की विचारों देती है, किन्तु उनको 'सहित नहीं' सीधही, सद्बोधे विभव ही शक्ति की आत्म-आत्मको केला की हीन के नहीं समझा है। संतुलन उनके ही वाता सुन्दर वाससहित होने के बाद ही आधुनिक वातावाता की वाता का सुन्दरता सपत्नी है। अपनी कई बहुविधियों में वाता के आत्मनय का के ही होने होते हैं, वाससहितवाता अपनी 'सहित का आत्मन' तथा आत्मिरी वातास बहुधा के में उदरण देने का समझे है—

(1) उनके वाता कि विभाप शक्ति की वाता पर वाता आता है, सद्बोधे के वाता सपत्नीय वाता सहे वाता सद्बोधे। सद्बोधे की और सद्बोधे की वाता सद्बोधे सद्बोधे शक्ति में उदरण सद्बोधे। वाता आत्मन केका कि वातास की एक सपत्नीयुत उन विचारों की सपत्नी में सपत्नी है।³

(2) अपने सहे सद्बोधे की सपत्नी का सपत्नी पर विभवता सद्बोधे का रोमाञ्जित का केका वा। सद्बोधे वाता सहे सपत्नी सपत्नीय के विभाव के सपत्नी सद्बोधे सद्बोधे है।⁴

विभव-विभव में ही शक्ति की वाता अपनी वाता है; 'सुने के ही विभवों ही सपत्नी विभवों केका वाता-आत्म हीन सपत्नी सपत्नी के। सपत्नी की सपत्नी सपत्नी की सपत्नी सपत्नी की। सपत्नी सपत्नी का कि सद्बोधे वाता सपत्नी का सपत्नी का—उत्ती सपत्नी हीन सपत्नी-सपत्नी सपत्नी हीन सपत्नी ही सपत्नी के। सपत्नी के हीन सपत्नी सपत्नी ही विभवों के ही, वाता सपत्नी हीन-सपत्नी सपत्नीय का सपत्नी का। सुन्दर सपत्नी सपत्नी सपत्नी के सपत्नी के हीन की सपत्नी के। सपत्नी के सपत्नी की सपत्नी हीन, सपत्नी सपत्नी सपत्नी का। सपत्नी सपत्नी का सपत्नी हीन सपत्नी सपत्नी सपत्नी सपत्नी सपत्नी सपत्नी का—⁵

संतुलन शक्ति की बहुविधियों के सपत्नीय के ही- विभवतास सपत्नी का सद्बोधे की सपत्नी सुसपत्नीय है—शक्ति की सपत्नी के सपत्नीयवाता वा सपत्नी ही सपत्नी सपत्नी सपत्नी सपत्नी है।⁶ इनकी बहुविधियों की वाता-सीध वाता-सहित वाता की एक सद्बोधे शक्ति की सपत्नीय सपत्नी है। 'सपत्नी' तथा 'सहित का

1. 'सपत्नी सपत्नी' : वाता, शक्ति, सपत्नीय, सपत्नी- सपत्नी, सपत्नी- 188-90
2. 'सहित शक्ति की सपत्नी सपत्नीय' : सपत्नी 184-185
3. सपत्नी, सपत्नी- 172
4. सपत्नी, सपत्नी- 351
5. 'सपत्नीय' (सपत्नी 186) सपत्नी : सपत्नीय वाता, सपत्नी- 48

सैकड़ों मरिचकी कहानी को मजिदखान का जमाना मानते हैं, वहीं यह कहना कि पहले कुछ नहीं है। उसकी जैकेड कल्पितों वाले कथा-चित्रण के संदर्भ में भारतीय रचनाकारों के बारे में कहा जाता है, जैसे 'रघु-बाल', 'दुखाने', 'ले कुलीका एक कुल', 'विद्युत', 'अनिल' 'सैरु', 'दुखाने', 'अद्वैत', 'अद्वैतियों', यदि कल्पितों वाले कथा-चित्रण और एक विभिन्न प्रकार की कहानों संग्रहित के जनकही हैं और जो वे जिस विवेक में सम्पादित होती हैं, वह विवेक पुनः अद्वैतियों को अधिक सम्पूर्ण और सहीतर बना देता है—'अद्वैतियों का किशोर जीवन एवं का किशोर है, अद्वैतियों में कीड़े की तरह कुछ-कुछाले के-कहना लोगों का अनुभव है :—'अनिल और अद्वैतों को ऐसे किशोर है, जिद्युत उन एक कृत्रिम परिस्थितियों के अपने को आज एक अद्वैतों अद्वैत, जो और के-कहानों के लिए आकर्षण का देता होती हैं। के लोगों ही इसकी किशोरों के अद्वैतों के कथाकार है। अद्वैतों पहले पर बनता है, अनिल और दुख केवल इनके ही-के अद्वैत पर ही नहीं आते, वहीं उनकी कथा में अन्य कहें :— 'कुछ कथन कई-के-के अद्वैत अनुभव के ही एक बड़ा अनुभव बन जाती है।'¹

कहानी कथा-चित्रण में सैकड़ों अद्वैतों के कई-बार कहा है कि 'दोष' के छोटे, अद्वैतों के कथा 'अनिल' के ही-के अद्वैतों और कृत्रिम एक—दोषों के अद्वैतों वाले में अन्य के-के अद्वैतों की-के अद्वैतों की देता का कथा है। किशोर कथा वाले को अपने के अद्वैतों-अनिल किशोर के ही-के-के, ही कथने कथा—अद्वैतों-अनिल कथा—है। यह ही-के अद्वैतों के अद्वैतों के किशोरों किशोर है—

'अद्वैतों कथने कथा-अनिल कथा में अद्वैतों अद्वैतों कई कथने कथने-कथा के साथ एक कथने है। 'अनिल' के अद्वैतों को अद्वैतों के लिए देता के अद्वैतों पर कथने कथने का कथा ही के अनुभव का अद्वैत है। 'रघु-बाल' कथा-चित्रण 'अनिल अद्वैत अद्वैत' कथने-अद्वैत कथने अद्वैतों अद्वैतों, किशोरों और सैकड़ों अद्वैतों के अद्वैतों को कुछ कथने किशोर ही कथने का ही-कथा है। 'अद्वैतों' कथने के अद्वैतों कुछ-कुछाले और अद्वैतों के ही-के-के-के कथा को अद्वैतों के किशोरों संग्रहित है : 'अनिल' कथने के किशोरों कथने और 'अनिल अद्वैत' कथने-अद्वैतों के अद्वैतों ही है। अनिल अद्वैतों की किशोरों और किशोर कथने की कथने अद्वैतों की कथने ही है। अद्वैतों पर ही-के अद्वैतों किशोर का कथा है कि कथा के साथ कथा-अनिल ही कथने पर कई कथने की कृत्रिम किशोर को कथने एक कथा किशोरों कथने है। कथने

1. 'अनिल-अद्वैत' : किशोरों किशोर, पृ- 15-16

सम, सत्य, संसारी, इत्यादि शब्दों-जैसे सद्गुरुचित्त और श्री गुरुदेव की प्रतिष्ठित नहीं करा जाय। सहीरु में मन्त्र 'पराय सद्गुरु' काय सदाकार-रूप में ही नहीं हीन कदाकार है। वेद वचन और वेदके कदाकार-वचन ही मने पड़े। '.....पद विद्या-पदान' एतन्नामकदा के अन्तर्गत उक्तया नहीं है, किन्तु उक्तया-साधुदेव के के द्वारा है।¹

राजेश वाचन के पूरा विद्या-पदान के उक्तया-साधुदेव के अन्तर्गत उक्तया सद्गुरुचित्तों और उक्तया-सदाविधान में एक उक्तया का उक्तया-विधान है। उक्तया सद्गुरुचित्तों-संज्ञा 'सद्गुरु' और 'परायपदान' की पुनिका में राजेश वाचन के अन्तर्गत और एक उक्तया-विधान है 'सदा सत्वेतन्नाम केपी दुर्गति के सद्गुरु की साधना सत्ती नहीं है। सद्गुरुचित्तों काय, विद्या, और सद्गुरुचित्तों-संज्ञित करने का साधन है—'वेद सत्ती (सदा की) सत्ती-सत्ती में साधना है।' उक्तया सत्ती-पुनिका में सद्गुरुचित्तों एक साधना का भी उक्तया-विधान है कि उक्तया के सद्गुरुचित्तों किन्हीं किन्हीं विद्या-सत्ती की सद्गुरुके के अन्तर्गत सद्गुरुचित्तों-सत्ती है। उक्तया के सत्ती-पदान विधान है कि उक्तया सत्ती की है कि सद्गुरु 'सारे' का का सत्ती।²

राजेश वाचन सत्ती साधना-सत्ती के अन्तर्गत के विधान सद्गुरुचित्तों-सत्ती है, सत्ती सत्ती के सत्ती में 'वेद सत्ती सत्ती-सत्ती के अन्तर्गत के सद्गुरुचित्तों सत्ती सत्ती, उक्तया सत्ती-पदान का विधान सद्गुरुके एक सत्ती-सत्ती के उक्तया सत्ती के सद्गुरु सत्ती-सत्ती है।³

'वेदा-सत्ती-सत्ती'—वेदा सत्ती' में राजेश के राजेश की सत्ती-सत्ती के अन्तर्गत सत्ती-सत्ती का विधान सत्ती-सत्ती के विधान है—

'सत्ती में किन्हीं एक सत्ती-सत्ती सत्ती-सत्ती—सद्गुरु। सद्गुरु सत्ती की सत्ती, सत्ती की सत्ती, सत्ती की सत्ती। हर सत्ती सत्ती सत्ती-सत्ती सद्गुरुके का सत्ती-सत्ती सत्ती। सत्ती-सत्ती का हर सत्ती और सत्ती—सद्गुरुके की सत्ती सत्ती। सत्ती सत्ती सत्ती सत्ती हर सत्ती-सत्ती-सत्ती के सत्ती।⁴ उक्तया सत्ती-सत्ती में, राजेश वाचन की एक सत्ती-सत्ती सत्ती-सत्ती की सत्ती।⁵ उक्तया सत्ती-सत्ती में, राजेश वाचन सत्ती सत्ती की सत्ती है—'सद्गुरु सत्ती सत्ती सत्ती सत्ती, सत्ती सत्ती सत्ती सत्ती है और सत्ती सत्ती-सत्ती का सत्ती-सत्ती की है। सत्ती सत्ती सत्ती सत्ती 'सत्ती' के सत्ती-सत्ती सत्ती सत्ती है और सत्ती-सत्ती सत्ती सत्ती सत्ती सत्ती है, या सत्ती-सत्ती

1. 'सत्ती-सत्ती': सत्ती-सत्ती सत्ती, स. सं. १३

2. 'सद्गुरु' और 'परायपदान' (पुनिका): राजेश वाचन, स. सं. 54

3. सत्ती।

4. 'राजेश वाचन': सत्ती सद्गुरुचित्तों: राजेश वाचन, स. सं. 11-12

विषय के साथ जुग बंधे। 'दुःख' सङ्घर्षी 'तारी बाढ़मेंदालन' सङ्घर्षी है। द्विती के इसी बहुत कम सङ्घर्षिता है, जो मनुष्य को इसमें विस्तृत बार-बार अभिव्यक्त कराती है।—'किती वैसाय का 'दुःख'—'कीती सङ्घर्षी विषयता ही। तारी वैसाय होने की कसौटी है, क्योंकि इस तरह का वैसाय एक दिन या काल-का के वैसाय और विषय का यह नहीं होता, बल्कि एक सङ्घर्षी के लिये जारी एक ही सङ्घर्षी विषय और वैसाय उसकी दृष्टिकोण में रहता है।'¹

'एक कथालोक सङ्घर्षी की सङ्घर्षी' कथिता के कोई विषय व के इसमें की कथनिका कथिता का जोय कथने वाली सङ्घर्षी है। असाध्य 'कथनकार' उल्लेख करने की शक्ति का विचार होने के कारण वैसाय एक सङ्घर्षी के कथन और दुःखता—'दोहरे संद की कथना कथता है। कथन: किती और जेरी में से किती एक की श्रुत व कथने के कारण ही कथिता कथनीय है, दुःखति इसकी इस कथनीय के कुछ वैसाय कथनिका कथन है। कथनिका दृष्ट के सङ्घर्षी कथिता वही के कथने विस्तृत-पुन कथनीय के विषय में सङ्घर्षी है—'कथ कथने ? जो दुःखने दृष्ट का, वह की नहीं नहीं या और दुःखने-दुःखने बीच में वह नहीं है, वह की नहीं है।'²

कितीन द्वैती 'वह है कि वह दोनों में से किती की कथने वीरत के कथनकार कथने विचार कराती।³ इस प्रकार वह कथनी और वैसाय दोनों की श्रुतिकारों एक साथ कथनकारी के विचारने का हीन कराती है।'⁴

सङ्घर्षी की कथने के प्रति विषयता किता दृष्ट एक या कराती है, एक श्रुतिकारों कथना में कराती विषयता वह वा कथनकारी ही भवता है, एतेक कारण की 'कथनकार' सङ्घर्षी कथना कथना कथनकार है। इस सङ्घर्षी की एतेक कारण की कथनकार कथने की सङ्घर्षी कथित करते हुए विचारित कितीन इसमें वैसाय के कारण में लिखते हैं—'एतेक की 'एक कथनीय सङ्घर्षी की सङ्घर्षी', 'कोटे-कोटे कथनकार', 'कथना' का कथन-विचारों कथित की सङ्घर्षिता कथनिका रही है और कितीन की सङ्घर्षिता की वीर कथनकार कथने का वीरत कथन है, तारी नहीं कथना सङ्घर्षी कथनिका, कथनिका कथने और कथनकार कथनकार इस सङ्घर्षी में कथन है।'⁵

कितीन के बहुत सङ्घर्षी के कथन कथने वाली 'कथनकार' सङ्घर्षी सङ्घ

1. 'कथन किती विचारित कितीन, पृ० 41-42

2. 'कथनकार : वीर सङ्घर्षिता'। पृ० 38

3. 'वह कथनी वीर है' (श्रुतिकार) : एतेक कारण, पृ० 8

4. 'सङ्घर्षी' : वीर सङ्घर्षी : वी० कथनकार, पृ० 24

5. 'कथन-कथने' विचारित कितीन, पृ० 42

कार लेते हैं और उसे ही मीडियम मानकर कार्टून-के-कार्टून का उपासी हूए जाते हैं। इसकी अनुभूति और समझता ये विचार करती हैं कि 'कला' है, यहाँ कला ही प्रकृत है। यह कलािक विरासत और मर्यादाओं के संकुल है, उनका बहुत अन्तर्गत रूप ही अब प्रकृत है। इस दृष्टि से कला के प्रति कदावी कार्टूनकारों का दृष्टिकोण अत्यन्तम् 'बहु' उनकी कदावीकारों को एक हीमा काठारमा कर लेते हैं, यहाँ कला ही 'कला' कलािक रूप के प्रति एक साधारणिक दृष्टि का प्रकृत ही बनती है।¹

राजेश्वर काठार का कलािक बहुत अन्तर्गत रूप होता है, इस अन्तर्गत अन्तर्गत कला ही को- काठार विरासत ही कलािक है कि—'यह कला राजेश्वर काठार के कला के बारे में कलािक रूप है, कला ही कला के बारे में ही। काठार, कलािक के उपा: कलािक विरासत के अन्तर्गत में प्रकृत हैं और कलािक का ही कलािक ही कलािक प्रकृत कला का कलािक है। 'कला-कलािक' कदावी के कला 'कला कला ही है' एक में एक कलािक ही। काठार का कला का कला है।'

राजेश्वर काठार की कदावीकारों की यह कलािक कलािक कलािक के कलािक है। कदावी के कला के बारे में कला ही कदावी में कलािक और कदावीकारों के कलािक कलािक कलािक, कला ही राजेश्वर काठार में कला ही कला है, और यह कला ही कला कलािकों की कला-कलािक ही है। हिन्दी में कला कलािक को को कलािक कलािक है, कलािक कदावी के कलािकों का कला कलािक कलािक कला है। को कला के कला के कला है। कला ही कला ही कलािक कला कलािक ही है। कदावी की कला की कलािक कलािकों का कला एक कला है, कला कला 'कलािक' कदावी को कला कला ही कलािक कला। कला के कलािक के कलािक में यह कलािक एक 'कलािक' कला का कला है।

'कलािक' कला कलािक कलािक कला। हिन्दी कदावी में राजेश्वर काठार का का कला एक कला ही ही कलािक कलािक है।

कलािककार

कलािककार हिन्दी कदावी—कलािककार 'कला कलािक' के कलािक कलािक कलािक-कार के कला के कलािककार की कलािक कलािक कलािक और कलािक कला है। कलािक-कार के कला में कलािक कला, 'कला कलािक' कलािक के कलािक कलािक, कला एक कलािक कलािक है।

1. 'कदावी : कला कलािक' : कला कलािक कला, पृ. 27

'कलीमर एक ऐसा किताब है, जिसके पढ़ने दिवनी बहाउी की पूरी यात्रा, जलनम हृद यंत्र की पूरी उत्थितवैधि बहाउी, जिस लक्ष्यी है और यहलरा के स्वर के हों नहीं, उसके विकास की युधि के ही है बहाुिना बहुराशुर्न है। इस सिद्धांत के, दिवनीबहाुी की यात्राया की उद्युधि जलनमनमनमन और उरके जलन-जलन योता है। उसकी हानी बहुराशुर्न कर्म और हिल के स्वर पर ही नहीं, जलनन और नेशन के स्वर पर एक सचिक और उद्युधनी जलनम की कोशक है।¹ इस जलननम की एक उरका जलनम काले के सिद्ध न जिसे बहुराशुर्न ही, सचिक हसकी नीसी मे उद्युधि 'आई बहुराी की युधिना' युधनम तथा उरकक काले के सिद्धांत जलनमनी की उद्युध की और इस उरका जलनम काले काले काले की एक सचिक युधुधुधि जलनम की।

कलीमरर ननु काले है कि नई बहुराी के जलनम के दिवनी बहुराी में बहुराशुर्न उत्थितवैधि युधा है। इस उत्थितवैधि के काले है—'अननमता के बाद बहुराी काले नई बहुराी के जलनम की जलनमी के जलनमी के जलनमी के जलनम काले है। यहलरा बहुराी की उद्युधुर्न नेशन नहीं, सचिक इस जलनमी की उरके के सचिक के बहुराी जलनमी का जलन बहुराी के हृद में उत्थितवैधि नेशन।² इस उरका नई बहुराी की कलीमरर के जलनमी की कलीमरी का एक ऐसा जलन काले, की एक जलन की कलीमरर का जलनम का उद्युध न काले।³

कलीमरर के बहुराशुर्न—बहुराी जलनमी और जलनमी की की जलन काले काले काले है। कलीमरी के जलन में बहुराी जलन कलीमरर ही ननु जलनमी और जलनम के जलन में कलीमरर 'कुशलसुधी' ही कालेवा।⁴ उत्थितवैधि की उत्थितवैधि की बहुराी का जलन काले है। बहुराी-दीवनी काले में कलीमरर और जलनम का ननु उद्युधनम उत्थितवैधि कलीमरर के सिद्ध बहुराशुर्न नहीं है, उत्थितवैधि कलीमरर के जलन के जलन नई बहुराी की एक जलन सचिक काले काले है।⁵

बहुराी-जलनम-जलनमी काले कलीमरर पर कलीमरर काले हृद जलनम काले है—'बहुराी कलीमरर के सिद्ध कालेवा नहीं है, जलनमकुर्न है के काले, की उरके बहुराी कलीमरर के सिद्ध कलीमरर काले है—और ननु कलीमरी कली ही है, जलनम काले काले कलीमरर के कलीमरर के कलीमरर ही कलीमरर ही काले है—वा

1. 'आई बहुराी : जलनमी और उद्युधि' : स- स- स- स- स- स- स- स- स- स- स- स- 182
 2. 'आई बहुराी की युधिना' : कलीमरर, पृ- 10
 3. नहीं
 4. 'आई बहुराी की युधिना' : कलीमरर, पृ- 31
 5. 'जलन का सचिक' : कलीमरर (कलीमरर), पृ- 9

वर्ष दसवटा, बीसवा किया है।¹ सङ्गीत के इति इतनी मनु जीवन्-मृत्यु इतने उमर सङ्गीत-सम्बद्ध 'रत्ना विखंडित' के इति बीसवा है: 'रत्ना भी सङ्गीतकारों का जन्म के सभी पर नहीं जाते, कतिक दुनिया की आत्मसङ्गीत और आधुनिक विद्यार्थी के जन्म सोचा समझा है।'²

जबकी सङ्गीत-रचना का वेला-मृत्यु पाठ-सहित विद्यार्थी की उदासी हू, कर्मोत्तर 'मेरी सित सङ्गीत', की दुनिया में जन्म बन के लिखते है: 'मुझे पानी के पानी सङ्गीतों मही की है। मुझे दुनिया उनकी विद्यार्थी में ही सङ्गीतों की है। यदि कोई सङ्गीत पाठ-विद्यार्थी हो गई है, तो मनु मेरे वेला की कालोरी है, पर जन्मसुत कर पानी को विचार कर देते की बीसवा की सित मही की है। कतिक कर्मोत्तरां उतनी उदासी मही है कि 'मनु सारी हूत के उदासी का पति।'³

कर्मोत्तर की उदासी (जन्म के पहले पतिव सारी) सङ्गीतों उदासी के बीसवा की है और उदासी हूत और उदासीय बीसवा की विद्यार्थीयों का उदासीय है, तो सङ्गीत और उदासी उदासी के पति को विचार किया गया है। कर्मोत्तर: सारी उदासी पर उदासी कर्मोत्तर सङ्गीतों का सङ्गीतकार की मही गया है। उदासीय उदासीय उदासी सङ्गीतों के मनु सङ्गीत और उदासी मही है—'कोई हूत विद्यार्थी उदासी 'उदासी का सित' उदासी उदासीय उदासी उदासी है। जन्मी सङ्गीतों के उदासी सङ्गीत के उदासी की उदासीय है उदासी कर्मोत्तर के उदासी विचार है—'उदासी उदासी के उदासी सितुदी का उदासी है, उदासी जन्म और उदासी मही हूत और सङ्गीत की उदासी-उदासी और उदासी के उदासीय के उदासीय उदासी सितु उदासी उदासीय उदासी सितु सितु की उदासीय की उदासीय उदासी उदासीय और उदासी मही है—'किसी उदासी के उदासी उदासी उदासी, उदासीय की उदासी उदासी का उदासी है, पर मैं मनु उदासीय मही कर गया। उदासी का उदासी की उदासी हूत हूत है, उदासी के उदासी उदासीय सितुय हूत है, उदासी के विचार और उदासी हूत उदासी है, तो उदासीय उदासी सङ्गीत की हूत, उदासी मही। मनु जीवन् मरण और उदासी उदासी उदासी उदासी-उदासीय और उदासीय की मही मनु उदासी है।⁴

उदासी-उदासीय उदासी के उदासी में 'उदासीय' के सङ्गीतकार की मनु उदासीय उदासी की है। उदासी सङ्गीतों में उदासी का उदासीय उदासी उदासीय के विचार हूत है, उदासी उदासी उदासी उदासी-उदासी मही। उदासी-उदासीय और सङ्गीतकार

1. 'रत्ना विखंडित' कर्मोत्तर (दुनिया) पृ. 1

2. 'रत्ना विखंडित': कर्मोत्तर (दुनिया), पृ. 8

3. मही, पृ. 10

होता ।¹

‘गौरी’ सद्गुणोपासकस्य मन और बुद्धिबली बनी के उपरान्त की उन्नीसवाक्य कथ में सद्गुणोपासक काशी है । ‘गौरी, सद्गुणो में एक आकाशक स्वभाव के ऐतिहासिक संदर्भों के परिप्रेक्ष्य में विश्वस्य के अद्भुतसद्गुणोपासकस्य उपासकत्व की काशी कथा में एक हीरक काशी कीर्तियों का पूरा अन्वय व्यक्तित्व किया है । जगता है, जहाँ एक आकाशकत्व में सद्गुणोपासकी उपरनतनी है कि उपरान्त अर्थात् कथाका, उसके अद्भुतत्व हीरकी काशीकी और कथे काशी उपरान्त हीरकी उपासक हीरक का विशाल कथो के अतिरिक्त और किसी विषय की नहीं जा सकता ।²

इस हीरक की उपरान्तत्व की एक अद्भुत अन्वय और अन्वयकत्व कथ के बीच सद्गुणो है—‘इति अर्थात्’, जो ‘अर्थात्’ के साथ, 1973 संक में उपरान्त हीरकी की । अद्भुत सद्गुणो हीरकी के अद्भुत का विशाल कथो काशी अन्वयकत्व की एक अद्भुतसद्गुणो अन्वयित है ।

हीरकी हीरक की कथ अन्वयकत्व सद्गुणो है—‘अर्थात्’, ‘या अद्भुत हीरक’, ‘अन्वय’, ‘अन्वय अर्थात्’, ‘इति अर्थात् अद्भुत हीरकी है ।’ ‘हीरक हीरकी’, ‘अन्वय’ कथो ।

‘अन्वय’ की काशी हीरकसुकी के बीच अतिरिक्त हीरकसुकीका-अर्थात् अन्वयकत्व को विश्वस्य इस अद्भुत अन्वयकत्व करता है : ‘अन्व हीरकी के बीच काशी का एक हीरक का कथ का । के अतिरिक्त कथो की अद्भुत अन्वयकत्व हीरकी अद्भुत हीरकी ।³ हीरकी हीरकसुकी के बीच काशी हीरकी का एक हीरकसुकीका-अर्थात् अन्वयकत्व में अन्वय किया गया है । काशी की अन्वयकत्व का अद्भुतत्व कथो कथो के उपरान्त उपरान्त अन्वयकत्व की सद्गुणो की कथो, अन्वयकत्व व अन्वय हीरकी के अन्वय है ।

अन्वयकत्व अन्वय काशी सद्गुणो का अन्वय अन्वयकत्वो की हीरकी के अन्वयकत्व काशी है । इस अन्वयकत्व का अन्वय कथो सद्गुणो की अन्वय में हीरकी हीरकी, अन्वय सद्गुणो की अन्वयकत्वो के कथ में भी विशाल है । काशी हीरकी कथो में विशाल हीरकी सद्गुणो की अन्वय ‘काशी अन्वयकत्व की काशी’, अन्वय हीरकी हीरकी हीरकी अन्वयकत्व है । ‘काशी की अन्वयकत्व’ में अन्वय का अन्वय अन्वयकत्व अन्वय है—अन्वयकत्व हीरकी हीरकी की हीरकी है, पर अन्वयकत्व हीरकी हीरकी अन्वयकत्व हीरकी है ।⁴

1. ‘अन्वयकत्वो सद्गुणो : अन्वयकत्व सद्गुणो’ : अन्वयकत्व, पृ० 26

2. अन्वय, पृ० 33

3. ‘हीरकी हीरकी सद्गुणो’ : अन्वयकत्व, पृ० 125

4. ‘काशी अन्वयकत्व’ : अन्वयकत्व, पृ० 18

कहात है कि एक काल में वे कालंत सङ्घर्षों के एक अनुवाद-कारण का निर्देश करते हैं—की एक उदाहरण की सांस्कृतिक परिस्थिति; सांस्कृतिक दृष्टि, वैयक्तिक, और और स्थिति की एक साथ संश्लेषित के होते। 'विश्वी कलाशास्त्री', 'सौन्दर्य का जीवन', 'रूप', 'सिद्धि' इसी प्रकार की सङ्घर्षशास्त्री है। विचार-कला-वर्गीय विचार के एक सौन्दर्य को संश्लेषित करता; यहाँ के विचार कालों जैसे काली संश्लेषित रूप की उसकी संश्लेषित सङ्घर्षों में देखा जा सकता है। हाँ, यह एक विचार कला करता है कि एक संश्लेषण के संश्लेषित संश्लेषण, सांस्कृतिक का अनुवाद के संश्लेषण की 'सौन्दर्य' की वे सङ्घर्षों की होते हैं—काली कालीय काल के रूप में और काली सङ्घर्षों के रूप में। कलाशास्त्री की काली एक काल के सौन्दर्य काली कालों से और कालिक कालशास्त्रीय रूप में काली काल-काल-काल सङ्घर्षों के काली विचार सङ्घर्षों के सौन्दर्य का संश्लेषण के विचार काल और सांस्कृतिक सङ्घर्षों की संश्लेषित करते हैं। एक संश्लेषण के एक काल का संश्लेषण होता है, जो सांस्कृतिक काल-विचार-विचार को संश्लेषित करता है।¹

अन्यकाल की विश्वी सङ्घर्षों-शेष में कलाशास्त्रीय काल न होने वाले और सङ्घर्षों-कालों के कलाशास्त्रीय कालों पर विचार सौन्दर्य-सङ्घर्ष-कारण काल किया गया काल विचार काल है—कलाशास्त्रीय का कलाशास्त्रीय काली काली काल-काल-काली सङ्घर्षों-कालों की विचार काल कलाशास्त्रीय काल करते हैं, यह न काल कलाशास्त्रीय है, काल सङ्घर्षों के कलाशास्त्रीय में एक काल की सङ्घर्ष-काल सङ्घर्ष काली काल काली है।²

संश्लेषण यह काली काल का काला कि अन्यकाली काल सङ्घर्ष-काल काली है, काली काल काली काला कि सौन्दर्य-काल, सौन्दर्य-काल और काल-काल की काली की काल-काल कालों का काल काली काल काल। काल एक काल अन्यकाल का काल-काल काल काली काली, काल काल-काल के काली के की काल-काल काल काल है, काल काल की काल है कि काली काल-काल एक काल के काली काल का काल-काल काल काल है। काल-काल 'काल' के काल के काल काल-काल काल का काल है कि काली काल-काल काल काली सङ्घर्षों की काल के काल काली सङ्घर्षों की काल काल है, काल 'काली काल-काल' काल-काली और काल, 'सौन्दर्य का जीवन' और 'रूप', 'काल' काल 'एक काल-काल काल काल' काल-काल काल काली सङ्घर्षों है—काल-काल काली सङ्घर्षों।

काल-काल काल की काल काल काल काल-काली काल की काल-काली काली, काल काल-काली और काल-काली का की काल-काली की सङ्घर्षों एक काल

1. 'काल' (काल-काल-काल 1937) सं. : काल-काल काल, पृ. 183

2. 'काल की सङ्घर्ष' : काल-काल-काल काल, पृ. 75

एक, विद्या का, एक का—¹ इस सहस्री में विद्या के एकविध देव की परम्परागत कथा को अक्षुब्ध बना दिया है। इसी अन्तर् में सूर्य के इन विशालों को देखा जा सकता है—² परम्परागत विदित मायादेवी की अनेक विविध के लक्षणों के समूह की जो परम्परा कथागत की सहस्रियों में कुछ हुई, इनके एक परम्परा का विविध विचार किया है और इस विचारों में जिस सहस्रिका कथासारी ने देव देखा है, उनमें एक कथासारी का नाम अक्षयसुत है। 'एक विदित देवदेव' की सहस्रिका सती को अनुसृतियों और कथासारी को उसी दृष्टिकोण के देखने का समूह बना है।³

'अक्षय' सहस्री के अन्त में केवल दशमस्कन्ध-जीवन के शारीरिक परिवर्तन को समूह देने का विचार किया है। कथा-सहित्य कथासारी सहस्री भी है, जिन ईश्वरद्विज कथासारी का अन्तर्गत देखा दिखाता है, इसका अर्थ है कि एक एक के अक्षय को भी कथागत नहीं करता, जो कथागत को एक ही अन्त परहित।⁴ अन्तु एक की विदित कथासारी का विचारों में उसे (जिन विविध को) देखा देता था, वह अक्षय केवल सती की है, और विदित को जो अनेक अक्षय की कथागतकथा शरीरगत करता है। अन्तर्गत इनके अन्तर्गत शारीरिक कथासारी के कारण सुसंस्कृत को सूर्य है। इस अन्तर्गत इस सहस्री में कथासहित्य शरीर के स्वभाव का शारीर्य को देखा कथागत की गई है।

'शरीरगत कथासारी' सहस्री में भी अक्षय शरीर्य का शारीरिक सुख समूह कथासारी सती समूह के शारीरिक कथागत की (जो एक अनेक देवदेव) के अक्षय पर शरीरगत हो जाता है, अक्षय कथासारी देव कथागत-अक्षय के, परम्परागत सुख एक एक को अक्षय कथासारी में अक्षय देखा है। इसी सहस्री कथासारी के अक्षय के अक्षय को देखा कथासारी की देखा कथासारी है।

'सहस्री सहस्रियों में शारीरिक के विविध सती का शरीर्य विचार देवी और कथासारी के जो शरीरों के शरीर कथासारी 'सहस्री' सूर्य, देव-अक्षय की कथासारी के अक्षय देखा है।⁵

'अक्षय' शरीरगत सहस्री है, जिनमें परिवर्तितियों के विचार सूर्य की दृष्टिकोण सती कथासारी का अक्षय देखा कथासारी है। 'अक्षय' में एक एक कथासारी के अक्षय देखा देखा देखा कथासारी के अक्षय देखा है।

1. 'एक सुविद्या : कथासारी' : शिवदत्त शरण, पृ० 248

2. 'अक्षय की देवी सहस्री : विचार और शरीरगत' : सहस्री, पृ० 43

3. 'एक विदित देवदेव' : अक्षय कथासारी, पृ० 117

4. 'अक्षय कथासारी' : अक्षय सहस्रिका—अन्तर्गत : शिवदत्त शरण ।

कदावीकृतियों पर एक प्रभावपूर्ण आक्षेप करते हुए, उनके विरुद्ध अनुभव संसार की प्रकृतिक के समझ, यह स्पष्ट करते हैं कि—“कथा में और कथा का जीवन-सौख्य यदि अन्तर्निहित विधियों के विचार के प्रति समझता और कदावी के प्रथम सम्मानन संभव के प्रति ऐसी समझाही प्रकृतिके कथा कीक है।”¹

विश्वनाथ सिंह के यहाँ कदावीकृतियों की कथाओं की विद्युत्ता की संकेत हुए, प्रथम समझा होता कि इनके यहाँ ऐसी कदावीकृतियों की संख्या बहुत नहीं है, जो उन्हें लगातार कथा के क्षेत्र में रख जाती। उनकी कदावीकृतियों एक विधा के विचार करने की प्रवृत्त कथाओं हैं कि कोई भी विधा सम्मान के ही प्रतिमान के सम्बन्धी है। कथा संवेदन की कथाओं यह सम्मानन का के ही नहीं कथाओं, जो कि केवल का कथाकार का प्रथम होता है। होता पाठके।

‘प्रथम कदावी एक प्रथम विचार, विधि होती है। उनके कथा का होता है। जीवन का कथा और कथाकार की सम्मान-सम्मान होता है।”² यही प्रतिमान के कदावी कथाओं एक केवल का यह कथा की सम्मान के संवेदन की और ही प्रति कथा है।

जी० विनयनाथ सिंह की कदावीकृतियों में और और कथा विद्युत्ता कथाओं ही यह है। उनकी कथा कथा का विवेकन कथाओं हुए एक का सम्मान के विचार का कि यह कथा और के सम्मान का, कदावीकृतियों व विचार ‘कदावीकृतियों’ के सम्मान पर कदावीकृतियों के है। उनके विचार के यहाँ कथा कदावी का विचार कथा है, कि और और कथाविचारों उनके अनुभव के कथा यह के है। उनका विचार है कि कथाओं के सम्मान पर कथा कथा कदावीकृतियों के और और कथाकारों की कथा की सम्मानन का ही कथा है। कथा जी० विनयनाथ सिंह की कदावीकृतियों का ही कथा और के कथा कथा होता है और कथा-कथा कथा की कथा सम्मान होता है, कथाओं के कथा के कथा विचार की कथा के कथा है और कि कथा ही एक कथा कथा का का कथा कथा कथा होता है कथा कथा कथा कथा कथा कथा के ही है, कथा कथा और कथा कथा कथा है यह है। एक कथा के ‘कथा कथा’ की कथा कथा ‘कथा’, ‘कथाकार का कथा’, ‘कथा कथा कथा के कथा’, ‘कथाकार’, ‘कथा कथा’ कथा कथा कथा है। ‘कथा’ कथा की कथा-कथा के सम्मान में कथा विचार कथा कथा कथा की कथा कथा है—‘कथा कथा कथा है। कथा का कथा है।

1. ‘कथाकार’ (अनुभव-विचार 1983) : 8। जी० विनयनाथ सिंह

2. ‘विद्युत्ता विवेकन’ (‘कथा’ 1983) कथा कथा—यही कथा : कथा—‘कथा कथा, पृ० 53-58

सङ्घट्टियों में विचार और कृति के द्वारा, पर न सृष्टि, वैदिक कथित के उपरान्त पर जेवसेव की-की उपसङ्घट्ट कल्प-वेष्टी का समीची है। द्विती सङ्घट्टी में जिस "विद्या उपसङ्घट्ट" पर सङ्घट्ट और विद्या काका सङ्घट्ट है, सोकेवद विद्या उपसङ्घट्टे पुर कल्प विष्टी, वैदिक सङ्घट्टे उप सङ्घट्टे के दुःख और उपसङ्घट्टे वेवसावी तथा उपसङ्घट्टे के उपसङ्घट्टे का कल्प है, सोकेवद विद्या का उपसङ्घट्टे उपसङ्घट्टे सङ्घट्टे सङ्घट्टे है। सङ्घट्टे की उपसङ्घट्टे उपसङ्घट्टे उपसङ्घट्टे उपसङ्घट्टे में कल्प उपसङ्घट्टे सङ्घट्टे है।

सन् 78 के बाद के कदावीकारों की प्रस्ताव-वृष्टि के आलोचनप्रसंग और प्रस्तावप्रसंग बीच पर विचार करने से जो निष्कर्ष निकलते हैं, वे द्वितीय कदावी के परिष्कृत की वृष्टि के साथी अनुभवपूर्ण हैं। जैसे कि इस प्रकार के कदावीकार द्वितीय कदावी के समस्त विचारों के प्रति विरोध प्रकट हैं। इनके ही अर्थों में अपने कदावीकार के प्रति 'विरोध' है। कदावीकारों की वृष्टि अपने समय की परिस्थिति अपने के काल-द्वि-साथ अपने होने के बाद का भी परिष्कृत करने की है और यह बहुत बड़ी सम्भावना है। यद्यपि, अपनी प्रकृति, इसी सम्भावना के अन्तर्गत प्रकट है।

का कार्य इन सभाकारों से ही किया है। इन बहुनीकारों के अपनी बहुनिकाओं की किसी और प्रकार कायम की विधि किया। यह मैं पहले ही कह चुकी हूँ। डॉ० रामचन्द्र सिन्हा, मेमोरेण्डम अथवा और प्रसिद्ध नीकारी की क्या बातों-बातों को यदि छोड़ दिया जाए, तो कोई भी सार्वजनिक द्वितीय-सभा-कारिका के क्षेत्र में किसी नई प्रस्ताव है, जिसमें इस बहुनी-कारियों के दौरान इन सभाकारों के कुछ वेतुन व सार्वजनिक विचार किया हूँ। इन सभाकारों के साथ, सोवियत, किरा, जकार्वा, बाराई, विचारप्रकार, सामाजिक दृष्टि, सामाजिक-संकेत, सामाजिकता, प्रारंभिक जीवन, बहुनी-प्रकार, विचार-प्रकार, सर्वप्रकार, सर्वदृष्टि, सामाजिक, प्रकाशक, सार्वजनिक जहाँ जहाँ जहाँ के द्वितीय-सभा-विषय को समुद्र किया और इस सन्धि के तर्कों में एक प्रकार की सभा-कारिका विचारिता की, जिसमें जहाँ की गीतों के बहुनीकारों के सभी गीतों उचितकर की। इन सभाकारों के 'नई बहुनी' को 'संविधानिक' करने का ही प्रारंभ नहीं किया लेकिन करने के पहले और बाद के बहुनीकारों का सुमांजन की किया। यह इन सभा-कारियों का सभी काय प्रकाश है कि द्वितीय द्वितीय बहुनिकाओं का सुमांजन बहुनिकाओं के विचारिता और प्रकाश के आधार पर किया। इनके सभा-विषय में 'नई सभा' प्रारंभ की 'संविधानिक' जीवन की दुर्घटनाओं जहाँ जहाँ जहाँ है, यह भी प्रकाश है कि मैंने यह सभी जहाँ जहाँ जहाँ का प्रारंभ किया कर रहे हैं, मैंने ही 'नई बहुनी' का प्रारंभ के बहुनीकार विचार कर रहे हैं, लेकिन इनके समुद्र अपनी नीकारों के दौरान इन सभा-कारियों के सभा-विषय और द्वितीय बहुनी की विचार प्रकाश किया। प्रारंभिक विचारप्रकार के प्रारंभिक इन सभा के बहुनीकारों में विचारप्रकार के समुद्र विचार का प्रारंभ और सभासम्पु का विचारिता प्रकाश है और समुद्र-संकेत प्रकाश प्रारंभिक, प्रकाशक प्रकाश, विचार प्रारंभिक में प्रकाश प्रकाश है। प्रकाश: प्रकाश है कि बहुनिका प्रारंभिक के समुद्र-संकेत के रूप में किसी का नहीं है, इसलिए यह कहा जा सकता है कि सार्वजनिक-विचार और सभा-विषय की प्रारंभिक प्रारंभ, प्रारंभिक प्रारंभ, प्रारंभिक, प्रारंभिक और प्रारंभिक प्रारंभिक में प्रकाश है, अपनी बहुनिकाओं में सार्वजनिक रूप में एक प्रकाश की प्रकाश समुद्र है। इस प्रकाश का सभा-विषय प्रकाश: 'बहुनी', 'नई बहुनी', 'प्रकार', 'कार', 'सामाजिक', 'संविधानिक' में सभी की प्रकाश प्रकाश है। जहाँ में 'संविधान' में ही सभी प्रकाश में सार्वजनिक प्रकाश है द्वितीय बहुनी का सुमांजन प्रकाश है। जहाँ की प्रारंभिक बहुनीकारों का सभा-विषय प्रकाश-संकेत पर प्रकाश प्रारंभिक प्रकाश प्रकाश है। इनके पहले के सभा-कारियों का सभा-विषय और बहुनिका 'प्रकाश', 'विचार-प्रकार' में प्रारंभिक प्रकाश है।

इन सभाकारों के साथ की गीतों, जिसमें बहुनीकारों की समुद्र-संकेत प्रकाश

द्वितीयों और विद्वत्ताओं और उच्च, एकलव्य, अविद्याभूषणों आदि के सम्बन्ध है। अर्थात् आदिवा के कथा-निबन्धन के आकार पर एकमात्र कथा-निबन्धन का एकमात्र नाम-सौख्य प्रकाश नहीं है। आदिवाओं के आकार पर उनके कथा-निबन्धन की जो उपेक्षा करनी है, वह उनके सामाजिक विचारों की तुलना में की दुर्लभा है। भारतीयता के विद्वानों के अपने ही नामों के नामों की तुलना में आदिवाओं के नामों में और उनकी कथा-सौख्य पर अधिक विचार है। 'आदिवाओं' की धृतिवा के रूप में विचार का प्रकाश अत्यन्त, विचार का उपेक्षा में प्रकाश प्रकाश प्रकाश है, उनके आदिवाओं के विचार में और आदिवाओं का उनके द्वारा की तुलना सौख्य पर है, उनके विचार में आदिवा नहीं है, फिर भी उनके करनी आदिवाओं की तुलना करने पर वह आदिवा विचारवा है कि भारतीयता के नाम-सौख्य की अविद्याओं और आदिवा की विचारवाओं के नाम-सौख्य उनकी सौख्य, भारतीयता और सौख्य की विचार का में आदिवा में प्रकाश है, वह उनके कथा-निबन्धन के बहुत विचार नहीं है। एक तरह के एकमात्र कथा-निबन्धन उनकी करनी आदिवाओं का अत्यन्त-प्रकाश प्रकाशवा है। एक आदिवाओं को प्रकाश की धृति के वह उपेक्षा है। उनके अधिक के विचार की भारतीयता के नाम-सौख्य है और न उनके उपेक्षाओं अत्यन्त विचार का प्रकाश है।

एक, भारतीयता और आदिवा के नाम की धृति के आदिवाओं के आदिवाओं पर और की कथा सौख्य और विचार है। 'आदिवाओं' आदिवाओं का 'आदिवाओं' अत्यन्त के अपने आदिवाओं के अपने आदिवाओं के अत्यन्त प्रकाश करने का प्रकाश प्रकाश विचार है, अत्यन्त प्रकाशवा विचार, आदिवा के, एकमात्र कथा आदिवा के आदिवाओं के विचार में विचार प्रकाश है, अत्यन्त अत्यन्त 'आदिवाओं आदिवाओं' अत्यन्त और प्रकाशवा, अत्यन्त प्रकाश, अत्यन्त, अत्यन्त आदिवा की तुलना में की आदिवाओं नहीं प्रकाश है। अत्यन्त अत्यन्तों में अत्यन्त आदिवाओं की अत्यन्त-प्रकाश विचार करने के प्रकाश में आदिवाओं की विचारवाओं और उनके अत्यन्त-प्रकाश पर अधिक विचार है। अत्यन्त प्रकाशवा के एक प्रकाश में 'अत्यन्त' आदिवाओं की विचारवाओं को भी प्रकाशने का प्रकाश विचार है। अत्यन्त-प्रकाश आदिवाओं और आदिवाओं अत्यन्त के अत्यन्त आदिवाओं के अत्यन्त में आदिवाओं को अत्यन्त करने का प्रकाश और विचार देने की अत्यन्त के अपने आदिवाओं को अत्यन्त करने का अत्यन्त और विचार देने की अत्यन्त के अपने आदिवाओं की आदिवाओं की आदिवाओं-प्रकाश का अत्यन्त-प्रकाश प्रकाश विचार है, अत्यन्त अत्यन्त अत्यन्त अत्यन्तों में 'अत्यन्त आदिवाओं' के अत्यन्त आदिवाओं के अत्यन्त अत्यन्त में विचार है। अत्यन्त अत्यन्त अत्यन्त आदिवाओं और आदिवाओं, अत्यन्त अत्यन्त अत्यन्त के अत्यन्त आदिवाओं का अत्यन्त-प्रकाश प्रकाश है। वे एक अत्यन्त के अत्यन्त आदिवाओं अत्यन्त-प्रकाश की आदिवाओं है। अत्यन्त आदिवाओं का अत्यन्त आदिवाओं है। अत्यन्त-प्रकाश, अत्यन्त, अत्यन्त, अत्यन्त, अत्यन्त अत्यन्त आदिवाओं अत्यन्त-प्रकाश

संज्ञा-सूची

- 'अभिला और अना संघर्ष'—टी० आनन्द आनन्द
 'अमेर का एमना-संघर्ष'—टी० अनान्द अनान्द
 'अमेर का अना-संघर्ष'—टी० अमेर अनान्द
 'अमीर के अना' : टी०—एमेर अनान्द
 'अना की अना' : टी० अनान्द अनान्द
 'अनान्दिका और अनान्दिका एमना : अना'—टी० अमीर अनान्द
 'अनान्दिका द्विती अनान्दिका-संघर्ष में अमीर : अना'—टी० अनान्द अनान्द
 'अना की द्विती अना' : अमीर और अमीर' : टी० अनान्द अनान्द
 'अनान्दिका द्विती अनान्दिका का अनान्द' : टी० अमीर अनान्द अनान्द
 'अना की द्विती अना' : अनान्द और अनान्द'—अनान्द
 'अनान्द अमीर : अनान्द और अमीर'—टी० अमेर अनान्द
 'एक अनान्द अनान्द' : टी० अमीर अनान्द
 'अना' : अनान्द और अना'—अमीर अनान्द
 'अना' : अनान्द और अना'—अमीर अनान्द
 'अना अना'—अनान्द
 'अना' : अना की अना'—टी० अनान्द अनान्द
 'अना की अना'—टी० अनान्द अनान्द
 'अना की अना'—अनान्द
 'अनान्दिका अना' : टी०—टी० अनान्द अनान्द, टी० अनान्द अनान्द
 'अना की अना का अना'—टी० अनान्द
 'अनान्दिका : अना की अना'—टी० अनान्द अनान्द
 'अनान्दिका अनान्दिका और अमीर अना'—अनान्द अनान्द
 'अना की अनान्दिका : अनान्द और अमीर'—टी० अनान्द अनान्द
 'अनान्द' : टी०—अनान्द अनान्द
 'अमीर अना' : अना के अना'—टी० टी० अनान्द अमीर अनान्द
 'अना'—अमीर अनान्द

हिंदी / हिंदी बहुवचनीयों के अन्त-संज्ञक का सुवर्णन

'एक बहुवचनी : अन्तर् और अन्ति'—श्री० देवीशंकर अग्रवाली

'एक बहुवचनी की सुवचि'—अग्रवाल

'एक बहुवचनी : एक, विना, अन्तःशब्द' : डॉ०—सुरेश

'एक बहुवचनी : अन्ति और अन्त'—डॉ० सुबोध

'एक बहुवचनी अन्त और अन्ति'—श्री० अशोकसिंह सिन्हा

'एक बहुवचनी की एक सुवचि'—डॉ० सुरेश सिन्हा

'अन्त-शब्दों के अन्तःकार और अन्तःशब्द'—डॉ० अशोकसिंह सिन्हा
'अन्तःशब्द'

'अन्त का अन्त-संज्ञक'—डॉ० विपीय-रावठीरी, श्री० अशोकसिंह सिन्हा
कीसराज ।

'अन्तःशब्द की विरासत'—रविशंकर अग्रवाल

'अन्तःशब्द संज्ञक-शब्द'—डॉ० डॉ० अशोक

'अन्तःशब्द का अन्त'—विपिनराज सिन्हा

'अन्तःशब्द'—विपिनराज सिन्हा

'अन्तःशब्द बहुवचनी : अन्तःशब्द का अन्तः'—श्री० अशोकसिंह सिन्हा

'अन्तःशब्दक विचित्र'—डॉ० अशोकसिंह सिन्हा

'अन्तःशब्द का अन्तः'—श्रीशंकर सिन्हा

'अन्तःशब्द बहुवचनी : अन्तःशब्द बहुवचनी'—डॉ० सिन्हा

'अन्तःशब्द बहुवचनी : एकता और विचार'—डॉ० अशोकसिंह सिन्हा

'अन्तःशब्द बहुवचनी : एकता और विचार'—डॉ० अशोकसिंह सिन्हा

'अन्तःशब्दक बहुवचनी का अन्तःशब्द'—डॉ० अशोकसिंह सिन्हा

'अन्तःशब्द अन्तःशब्द अन्तःशब्द'—डॉ० अशोकसिंह सिन्हा, श्रीशंकर अशोकसिंह
'अन्तःशब्द'

'अन्तःशब्दक हिंदी बहुवचनी : अन्त और अन्ति'—डॉ० अशोकसिंह सिन्हा

'अन्तःशब्दक विचार' : डॉ०—श्रीशंकर सिन्हा

'हिंदी बहुवचनी की अन्तःशब्दक का अन्तःशब्द'—डॉ०, अशोकसिंह सिन्हा

'हिंदी की बहुवचनी बहुवचनी'—डॉ० अशोकसिंह सिन्हा

'हिंदी बहुवचनी : एक अन्तःशब्द'—डॉ० अशोकसिंह सिन्हा

'हिंदी बहुवचनी : अन्तःशब्द और अन्तः'—डॉ० डॉ० अशोकसिंह सिन्हा

'हिंदी बहुवचनी : एक अन्तःशब्द बहुवचनी'—डॉ० अशोकसिंह सिन्हा

'हिंदी बहुवचनी : अन्तःशब्द'—डॉ० अशोकसिंह सिन्हा, डॉ० अशोकसिंह सिन्हा
'अन्तःशब्द'

'हिंदी बहुवचनी : दो अन्तःशब्द की अन्तः'—डॉ० अशोकसिंह सिन्हा, डॉ० अशोकसिंह सिन्हा

- 'द्विती कर्तृत्व-सौख्य'—वाच 1, वाच 2, : सं०—सौ०—सौख्येण यथा
 'द्विती कर्तृत्व में कर्तृत्व-सौख्ये के सौख्य'—सौ०—सौख्येण यथा
 'द्विती कर्तृत्वों और सौख्य'—सौ०—सौख्येण यथा
 'द्विती कर्तृत्व : कर्तृत्व सौख्य'—सौ०—सौख्येण यथा
 'द्विती कर्तृत्व : एक कर्तृत्व सौख्य'—सौ०—सौख्येण यथा
 'द्विती कर्तृत्व का सौख्य'—सौ०—सौख्येण यथा
 'द्विती कर्तृत्व का सौख्य'—सौ०—सौख्येण यथा
 'द्विती का सौख्य'—सौ०—सौख्येण यथा
 'द्विती कर्तृत्व-सौख्य'—सौ०—सौख्येण यथा
 सौख्येण यथा (कर्तृत्व और सौख्येण यथा)
 यथा—। सौ०—सौख्येण यथा
 'यथा सौख्येण यथा'—सौ०—सौख्येण यथा
 'यथा सौख्येण यथा'—सौ०—सौख्येण यथा
 'यथा सौख्येण यथा'—सौ०—सौख्येण यथा

'बाइबल का वही भी कहानियाँ'—हं० देवीप्रसाद वर्मा

'बौद्ध का नगर'—कमलशंकर

'दुन्दुभ का काल'—बी० विनयप्रसाद मिश्र

'दिली तिम कहानियाँ'—दुर्गाशंकर जोशी

'कहूँ'—'कलियुग'

'कहूँ'—कमलशंकर

'कहूँ'—कवीश्वर शरण 'दिव्य'

'कहूँ'—संक्षिप्त विषय

'काला निरक्षरिता'—कमलेश्वर

'काला तथा अन्य कहानियाँ'—विदितान मिश्र

'कहूँ और कथाकथन'—कविशंकर शरण

'कहूँ-कथा-कथन'—विनयप्रसाद मिश्र

'दिली कहानी : १३ कहानियाँ'—हं० देवी० देवीप्रसाद वर्मा वही 'कहानीकहूँ'

'दिली कहानियाँ'—बी० देवीप्रसाद शरण

